ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 18 अंक-1 अप्रैल-I, 2017 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

महिलाओं की भागीदारी बगैर विकास संभव नहीं

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। महिला दिवस के अवसर पर ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'वी बोल्ड फॉर चेन्ज' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समाज के अनेक प्रतिष्ठित क्षेत्रों से जुड़ी हुईं महिलाओं ने शिरकत की। कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य व पॉवर फाउण्डेशन की अध्यक्षा शामीना शफीक ने कहा कि अगर हम सच में महिलाओं के विकास के लिए कार्य करना चाहते हैं, तो पहले महिलाओं को एक-दूसरे का सहयोग करना बहुत आवश्यक है। आज हम देखते हैं कि समाज में महिलाओं का स्तर काफी बेहतर हुआ है।

उन्होंने कहा कि महिलाएँ समाज की धुरी हैं, उनके परिवर्तन से ही समाज व देश का विकास संभव है, लेकिन पुरुषों के योगदान के बिना ये संभव नहीं हो सकता।

करोल बाग की पूर्व काउन्सलर मनदीप ने कहा कि हमें स्वयं को कमज़ोर नहीं समझना चाहिए। नारी स्वयं में एक शक्ति है। उन्होंने कहा कि जब हम दूसरों को आगे बढ़ते देख खुश होते हैं, तब हमारे जीवन में बोल्डनेस आती है।

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, गुरूग्राम की अध्यक्षा आशा शर्मा ने कहा कि महिलाएँ आज तक सिर्फ सुनती आई हैं, लेकिन अभी बदलाव का समय है। उन्होंने कहा कि बोल्ड होने का तात्पर्य है, कि चीज़ें जैसी हैं उन्हें वैसा स्वीकार करना। सिल्वर लाइनिंग फाउण्डेशन की अध्यक्षा प्रीति मोंगा ने कहा कि मैं पचास वर्षों से नेत्रहीन हूँ। मेरे जीवन में कई ऐसे पल आए जब मैंने अपने जीवन को समाप्त करने की ठान ली थी। लेकिन मेरे अंदर से एक आवाज़ आती थी कि नहीं, एक अवसर और लो। मैंने अंदर की आवाज़ को सुनकर बोल्ड निर्णय लिया कि मुझे जीवन में कुछ विशेष करना है। आज मैं उन लोगों के लिए कार्य कर रही हूँ जो मेरे जैसे हैं। मेरा यही लक्ष्य है कि मैं स्वयं के परिवर्तन से दूसरों को प्रेरित करूँ।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ के महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज हम महिलाओं के विकास के लिए बहुत कार्य कर रहे हैं। लेकिन उससे भी अधिक आवश्यकता उन्हें संस्कारवान बनाने की है। उन्होंने कहा कि कई बातें ऐसी होती हैं जिन्हें हम सिखा नहीं सकते, लेकिन हमारे व्यवहारिक जीवन से लोग स्वयं ही सीखते हैं। आध्यात्मिकता हमें व्यवहार कुशलता के साथ-साथ धैर्यवान भी बनाती है।

इस अवसर पर ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमें परिस्थितियों से कभी घबराना नहीं चाहिए। समाज में जब भी कोई व्यक्ति अच्छा कार्य करता है तो चुनौतियाँ तो आती ही हैं। हमें उन चुनौतियों का सामना करना है। उन्होंने कहा कि कोई भी परिवर्तन अचानक नहीं होता, हम जिस परिवर्तन को लाना चाहते हैं, उसके लिए निरंतर प्रयास ज़रूरी है। कार्यक्रम में स्वान्त: सुखाय महिला संगठन की अध्यक्षा सुमन महेश्वरी, उपकार फाउण्डेशन की अध्यक्षा रेखा बन्खा, आई.पी.एस. अनुपम कुलश्री, कम्पनी सेक्रेट्री की फेलो मेम्बर दिव्या टण्डन तथा अन्य गणमान्य महिलाओं ने अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही कार्यक्रम में अलग-अलग तरह की एक्टिविटी भी कराई गई। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. हुसैन बहन ने किया।

कार्यक्रम में गोलमेज पर अपने विचार रखते हुए ब्र.कु. आशा। साथ हैं ब्र.कु. चक्रधारी, राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व सदस्य व पॉवर फाउण्डेशन की अध्यक्षा शामीना शफीक, काउन्सलर मनदीप तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

बिना पवित्रता नव सृष्टि का निमार्ण संभव नहीं

संत स्नेह मिलन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मनोरमा। साथ हैं महामण्डलेश्वर श्री चन्द्रशेखरनंद जी, महामण्डलेश्वर स्वामी प्रेमानंद जी तथा महामण्डलेश्वर मंदाकिनी जी।

राजिम-छ.ग.। महामण्डलेश्वर श्री चन्द्रशेखरनंद जी,दिल्ली ने कुम्भ मेले के अवसर पर ब्रह्माकुमारी संस्था के सेवाकेन्द्र में आयोजित संत स्नेह मिलन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमार भाई-बहनों की पवित्रता, साहस और संयम सभी को आकर्षित किये बिना नहीं रहती। मैं भी इसी आकर्षण से खींचा चला आया।

मुम्बई से आये महामण्डलेश्वर स्वामी प्रेमानंद ने कहा कि हर व्यक्ति को ब्रह्माकुमारी संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू में एक बार अवश्य जाना चाहिए। वहाँ की जीवन शैली को जब हर व्यक्ति जीवन में अपनायेगा तभी उसे सही दिशा मिलेगी। किसी को योगी बनना है तो अवश्य यहां का आध्यात्मिक ज्ञान समझे।

इलाहाबाद से आयीं ब्र.कु.मनोरमा ने कहा कि नव सृष्टि के सृजन में पवित्रता का महत्वपूर्ण योगदान है। केवल ब्रह्मचर्य में रहना ही पवित्रता नहीं बल्कि मन-वचन-कर्म से भी किसी भी प्रकार की अपवित्रता न हो। संस्कार से ही संस्कृति का निर्माण होता है, श्रेष्ठ पवित्र व्यवहार की आवश्यकता है। वृंदावन से आये महामण्डलेश्वर नवलगिरी महाराज ने कहा कि जीवन में विकार आने से मानव स्वयं को भूल जाता है।

अयोध्या से आयीं महामण्डलेश्वर मंदाकिनी जी ने कहा कि पुरुष व नारी दोनों को समान महत्व देना चाहिए। नारियों को आगे बढ़ाने में ही देश की शान है।

सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.पुष्पा ने सभी संतों का स्वागत करते हुए कहा कि आप संतजन ही अपनी पवित्रता के बल से इस प्राचीन भारत देश को संभाले हुए हैं। नगरपालिका अध्यक्ष विजय गोयल ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। बिलासपुर की ब्र.कु.राखी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। ब्र.कु.विद्या ने सभी का स्वागत किया।

आचार विचार से होती बीमारी...

एक संत अपनी कुटिया के बाहर आसन पर बैठ श्रोताओं को उपदेश दे रहे थे कि ''घोर कलियुग का आगमन हो चुका है। अपने आपको सुरक्षित रखने के लिए कलियुग को स्वयं के अंदर प्रवेश होने नहीं देंगे तो स्वस्थ-तंदरूस्त रहेंगे।''
एक श्रोता ने पूछा, ''महाराज, आपकी बात तो सोने जैसी है, परन्तु विस्तार से समझाइये तो गले उतरेगी।''
संत ने कहा, ''आज सुबह मैं ज्ञान की पुस्तक पढ़ रहा था,

- ब्र. कु. गंगाधर

जिसमें लिखा था कि श्रीकृष्ण ने पाण्डवों को कहा, अब कलयुग आने वाला है, इसलिए आपको तप करने जाना पड़ेगा। इसकी पुष्टि के लिए आप पाँचो भाई जंगल में जाकर आइए और वहाँ आपको जो कुछ दिखाई दे उसका वर्णन मेरे पास आकर कीजिए।
श्रीकृष्ण के कहने पर पांचों पाण्डव वन गये और वहां उन्होंने जो कुछ देखा उसका वर्णन आकर करने लगे।
श्रीकृष्ण के पूछने पर सर्वप्रथम युधिष्ठिर ने बताया कि ''मैंने जंगल में दो सूंढ़ वाला हाथी देखा।''
श्रीकृष्ण ने उसका रहस्य स्पष्ट करते हुए कहा कि '' दो सूंढ़ वाला हाथी अर्थात वे कलयुग के अधिकारी गण हैं। दो मुख का तात्पर्य है कि वे वादी और प्रतिवादी दोनों से रिश्वत लेंगे।
फिर भीम ने बताया कि ''मैंने एक गाय देखी जो अपनी बछड़ी का दूध पी रही थी।''
श्रीकृष्ण ने भीम द्वारा देखे गये दृश्य का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि ''जैसे गाय अपनी बछड़ी का दूध पी रही थी वैसे ही कलयुग के मनुष्य अपने बच्चे-बच्चियों के कमाये पैसों से ही अपना पेट पोषण करेंगे।''
फिर अर्जुन ने श्रीकृष्ण को बताया कि ''प्रभु! मैंने एक पंक्षी को देखा, जो मुख से धर्मयुक्त बातें बोल रहा था, लेकिन वह मुर्दे पर बैठा था।''
श्रीकृष्ण ने उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ''कलयुग में ज्ञानी व पंडितजन भी कुपात्र से दान लेने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करेंगे।''
इतने में नकुल ने अपने देखे हुए दृश्य का वर्णन करते हुए कहा कि ''मैंने तीन कुएं देखे, जिसमें बीच का कुँआ खाली था और आसपास के कुँए भरे हुए थे।''
श्रीकृष्ण ने उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ''कलयुग में लोग अपने सगे-सम्बंधियों के प्रति दुर्लक्ष्य रखेंगे, जबकि धनिक परिवारों के साथ सम्बन्ध बढ़ायेंगे।''
अंत में सहदेव की बारी आने पर उसने बताया कि ''मैंने एक पहाड़ पर से पत्थर गिरते देखा। वे बड़े वृक्षों को गिराते हुए नीचे की ओर आ रहा था लेकिन एक तिनके के सहारे अटक गया।''
श्रीकृष्ण ने उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि ''जो पत्थर गिर रहा था वह धर्म था। वह संसार रूपी पहाड़ से खिसक कर तप, योग रूपी बड़े वृक्षों को तोड़ते हुए सत्य रूपी तिनके समान परमात्मा के नाम के सहारे ठहर गया।''
कलियुग के आगमन के इन लक्षणों को अनुभव करने पर पाण्डव वैराग्यशील बन गये और अपना राज-पाट छोड़कर तप करने पहाड़ों पर चले गये।
आज ज़माना बदल गया है। धर्म की ओर प्रेरित होने के बजाय लोगों में धन-सम्पत्ति और सत्ता की ओर लगाव पराकाष्ठा पर पहुंच गया है। सत्ताधारी पिता धृतराष्ट्र बन गये हैं और अपने वंशजों की योग्यता या अयोग्यता को देखे बिना उसे सत्ता अधिकारी बनाने लगे हैं। गांधी का यह देश, सब गांधी के नाम से चलता है, लेकिन गांधी समान आचरण कहीं भी नहीं है। मूल बात आज के मानव की है कि उसका तन के साथ मन भी बीमार है। उसपर कलियुग के वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ चुका है। मन में कलयुग, वाणी में कलयुग, कर्म में कलयुग, आचार व विचारों - शेष पेज 8 पर

व्यर्थ चिंतन, बोलचाल, व्यवहार व सम्बन्ध में अपना समय नहीं गंवाना

बाबा, बाबा है, सारे विश्व का बाबा है पर हमको कहता है तुम मेरे समान बनो। क्या यह पॉसिबुल है? बाबा समान बनने के लिए क्या करना है? सारे कल्प में सतयुग से लेके कलियुग तक कोई ऐसा बाप नहीं होगा जो माता पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू एक ही हो, वो एक ही हमारा बाबा है क्योंकि माता की, पिता की, शिक्षक की भासना एक साथ दे देता है। पढ़ाई भी इतनी बड़ी, गुह्य है, जब बुद्धि मनन चिंतन में लग जाती है तो बाबा बहुत प्यारा लगता है, कार्य-व्यवहार में भी फीलिंग आती कि वही बाबा करा रहा है। हम चिंतन से फ्री हैं। जब मुझे कोई भाई बहन कहते हैं तुम निश्चित रहो, कोई चिंता नहीं करो। कहते हैं तो मैं निश्चित हूँ क्योंकि वो समझते हैं यह फिकर नहीं करे। बाबा के पास जन्म लेते ही बेफिकर बादशाह, बेगमपुर के बादशाह, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों के मालिक हैं इसलिए कभी भी व्यर्थ चिंतन वा किसी फिकर में या बोल में या व्यवहार में, सम्बन्ध में समय नहीं गंवाया है। जैसे मेरा बाबा वन्डरफुल है, याद करते नहीं हैं पर याद आता है। कई बार दिन में हर कर्म करते, उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते अच्छा है, बाबा का फोटो सामने है।

मैं शुक्रिया ड्रामा का मानती हूँ, यह साधन भी देखो कहाँ से कहाँ मिलन मनाने में बहुत अच्छे मदद करते हैं। आजकल यह साधन भी कहाँ से कहाँ सेवा में हाज़िरी भरने में मदद करते हैं। यहाँ बैठे भी जैसेकि सारे विश्व का चक्कर लगा रही हूँ, साइंस के साधनों द्वारा ऐसा लग रहा है। इसमें सिर्फ दो बातें हैं जहाँ मेरा तन होगा वहाँ मन है तो लाइट हैं। मन कहाँ और जगह, तन यहाँ तो यह बहुत गम्भीरता वाली बात है। यह इतनी बड़ी सभा में हरेक अपने आपको चेक करे, एक घण्टे के अन्दर मन कहाँ-कहाँ गया? यहाँ ही तन है तो मन भी यहीं है ना। यह नैचुरल हो। भले मैंने भक्तिमार्ग का अनुभव किया है, कभी भी मन शान्त नहीं हुआ। जिसके लिये बहुत बड़ी यात्रायें की मन को शान्त करने के लिये। कोई और खराब बातों में नहीं भटकता था, पर शान्त नहीं होता था। अभी आपको भी कभी कभी खुशी होती होगी जिस घड़ी खैंच होती है, तो मन एकदम शान्त हो जाता है। मन शान्त है तो बुद्धि संकल्प वो करेगी जो सेवा अर्थ होगा। यह बहुत अच्छा ज्ञान है।
ज्ञान है ही योग, योग का सबूत है धारणा। हमारा योग किसके साथ है, उसमें भी कंडीशन श्रीमत सिरमाथे पर है। मनमत, परमत के प्रभाव या झुकाव से फ्री हो गये। कदम कदम पर श्रीमत पर चलने की नैचुरल नेचर हो जाये। हरेक अगर ऐसा पुरुषार्थ करते

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हैं, तो ऐसे पुरुषार्थी के पुरुषार्थ से वहाँ का वातावरण और वायुमण्डल बहुत अच्छा रहता है। हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं, तो हम ब्राह्मणों के बोलचाल में देवताई मिठास होनी चाहिए। समझो अभी ही हम देवता हैं, तो क्या बात करेंगे और कैसे बात करेंगे? कुछ व्यर्थ आयेगा ही नहीं ना। भगवान के बच्चे बनने के साथ-साथ भगवान को भी अपना बच्चा बनाने का अनुभव है? मुझे वर्सा देता है तो मैं बच्चा हूँ, पर मेरे पास क्या है जो मैं कहूँ बच्चा ये ले लो, कुछ नहीं, पर सम्बन्ध में उसको बच्चा बनाया तो सब कुछ उसका है। बहुत दिनों से लेकर एक बाबा से हर सम्बन्ध की भासना आती है। वही माता पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरू है.. बाकी रहा बच्चा...। देखो, बाबा कैसे देख रहा है और हम कैसे देख रहे हैं। बाबा की दृष्टि महासुखकारी है।

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

विशेष विचित्र अनुभव द्वारा खुशी के खज़ाने से भरपूर

सभी सुनते हुए बड़े हर्षित लग रहे थे। सबकी सूरतें मुझे बहुत प्यारी लग रही थी। सभी ऐसे लग रहे थे, जैसे अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हों। मुख से कुछ कहना भी चाहते हों, लेकिन कह नहीं पा रहे थे। पूरा ही क्लास ऐसे लग रहा था मानो बहुत डीप में जा रहे हों। सुनते-सुनते योग में स्थित हो जाना ही डीप है। सभी यहाँ बैठे सुन रहे थे, लेकिन लग रहा था जैसे यहाँ पर नहीं हैं। कोई और ही मस्ती में मस्त थे। ऐसे लग रहा था जैसे बाबा बच्चों को कोई विशेष व विचित्र अनुभव करा रहे हैं। थोड़े समय बाद बोलना शुरू हुआ। लग रहा था, जैसे सभी बाबा के साथ वतन में हों। सबकी शक्लें प्राप्ति का अनुभव करा रही थी। लग रहा था जैसे कोई विशेष प्राप्ति हुई है, लेकिन क्या पाया ये तो हरेक को अपना-अपना अनुभव होगा। ऐसे अनुभव करना बहुत ज़रूरी है, हमें ऐसे अनुभवों में जाना चाहिए। वैसे तो सभी को अनुभव होते ही हैं, लेकिन किसी-किसी समय विशेष और विचित्र अनुभव होते हैं। ऐसे विशेष अनुभवों में रहो तो ऐसे लगेगा मानो खुशी का खज़ाना मिल गया हो। ये विशेष खज़ाने सदा संभाल के रखना जिससे लगे कि मुझे कुछ मिला है। क्या मिला है? ये तो हरेक अपने को जानता है। बाबा कहते हैं कि जो भी छोटी-छोटी गलतियाँ करते हो, उनको आज के दिन समाप्त कर दो। समझते भी हैं कि ये रांग है लेकिन रांग भी कर लेते हैं। अभी बाबा का कहना है कि सम्पन्न बन अपनी सम्पूर्णता का स्वरूप दिखाओ। अभी सम्पूर्ण हो गये तो जल्दी ही सब खत्म हो जायेगा और हम बाबा के पास जाकर मिल जायेंगे। आज हम बाबा से प्रॉमिस करते हैं कि बाबा हम सदा खुश रहेंगे। बाबा हम और आप मिलकर कुछ नया कर दिखायेंगे।
यहाँ बैठे सबके मन में क्या चल रहा है? मैं कौन, मेरा कौन? ये तो सदा याद रहता है कि मैं बाबा का हूँ। बाबा किसका? मेरा बाबा है, बाबा को जब मेरा कहते हैं तो कितना प्यार आता है! मेरा से प्यार होता है। चाहे पूरा जाने या नहीं जाने लेकिन जब मेरा बाबा कहा तो बाबा से सम्बन्ध जुट जाता है। अंदर में प्रेम की शुद्ध लहरें आती हैं, उन लहरों में कितनी शक्ति भरी हुई होती है। कितना भी उनको भूलने की कोशिश करो लेकिन भूल नहीं सकते। बाबा मेरा है ना! जो मेरी चीज़ होती है, उससे ऑटोमेटिकली प्यार होता है। हम जब प्यार का शब्द मेरा बाबा कहते हैं, तो अंदर में कितनी खुशी होती है! खुशी का रेसॉण्ड आता है। बाबा शब्द कहते ही बाबा के प्यार में खो जाते हैं। सभी बाबा के प्यार में समाये हुए हैं? सबने बाबा के प्यार का अनुभव किया है? जैसे अनेक जन्मों के बिछड़े हुए जब आपस में मिलते हैं तो प्यार का कितना अनुभव होता है! आपको भी भगवान के प्यार के अनुभव स्वरूप का ऐसा अनुभव होता है? जब बाबा के प्यार में खो जाते हैं तो उसकी प्राप्ति कितनी होती है! बाबा हमें अपने प्यार में समा लेते हैं। बाबा की याद के सिवाए और किसी बात में मज़ा ही नहीं आता। हरेक का दिल कह रहा है मेरा बाबा। मेरा बाबा क्या है, अनुभव है ना? बाबा और बच्चों का ये प्यार बहुत अलौकिक है। आप सबने इस अलौकिक प्यार का अनुभव किया? जिसने बाप और बच्चों का प्यार क्या होता है, ये अनुभव कर लिया, वो जानता है कि ये प्यार कितना श्रेष्ठ है। हरेक की शक्लों से ये प्यार दिखाई दे रहा है। बाबा के प्यार में सबके चेहरे कितने आकर्षक लग रहे हैं! बाप और बच्चों का ये आध्यात्मिक प्यार दिल को बहुत आकर्षित करता है। सभी ने परमात्म प्यार का अनुभव किया है? इस प्यार में देह का कोई भान नहीं है, ये बहुत ही न्यारा और प्यारा है। जितना न्यारापन है उतना ही प्यारापन भी है। ये प्यार क्या है, आप जानते हो, एक सेकण्ड में ऑर्डर मिलता है अशरीरी बन जाओ। ये प्यार कितना विचित्र है! बाप और बच्चों के मिलन में कितनी राहत मिलती है! इस प्यार में मन को कितना सुख मिलता है! आप सबने ये अनुभव किया होगा। परमात्म प्यार बहुत अमूल्य है। आप सब यहाँ परमात्म प्यार का अनुभव करने के लक्ष्य से आये हैं? तो सभी अपने आपसे पूछो, हमने परमात्म प्रेम का अनुभव किया? ये कोई साधारण मनुष्य का प्यार नहीं है, इसमें बॉडी-कॉन्शियसनेस नहीं है। परमात्म प्यार शब्द देखो कितना कॉमन है, लेकिन अतीन्द्रिय सुख का कितना अनुभव कराता है।

'पुल' और 'पुश' को जानें

- ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

रात होने लगी थी। ऑफिस में आगंतुकों का आना-जाना बंद हो गया था। लेकिन ऑफिस के दरवाज़े के पास एक लड़की खड़ी थी और दरवाज़े के बाहर एक ग्रामीण वृद्ध खड़ा था। उन दोनों में से किसी को भी दरवाज़ा खोलकर बाहर निकलने के लिए अंग्रेजी में लिखा शब्द पढ़ना नहीं आता था, और उसका अर्थ भी उनको नहीं मालूम था। इस कारण दोनों ही उलझन में थे।

बाहर खड़े ग्रामीण वृद्ध को 'पुश' यानि कि काँच के दरवाज़े को धक्का लगाना था। जबकि अंदर खड़ी लड़की को 'पुल' यानि

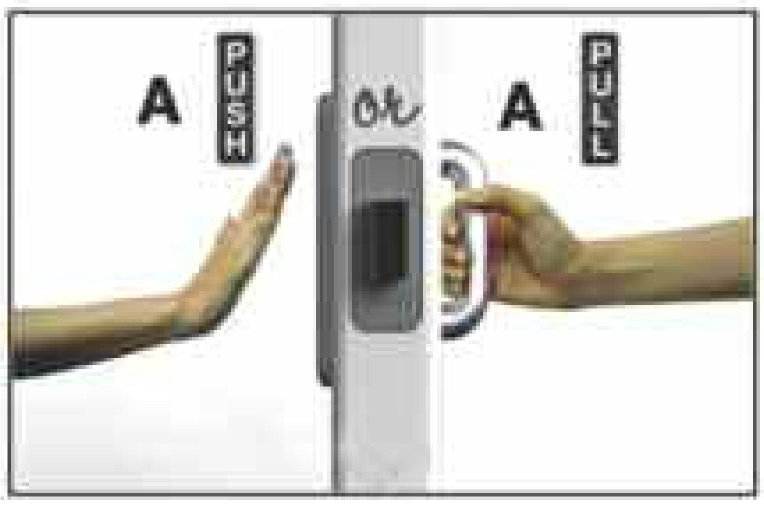

कि द्वार के हैंडल को खींचना था। यह दोनों को ही पता नहीं था!

इस घटना में एक महत्व का बोध छिपा हुआ है। आखिर ज़िन्दगी क्या है? 'पुल' यानि कि खींचना और 'पुश' यानि धकेलना, इन दोनों क्रियाओं का महत्वपूर्ण अर्थ है। ज़िन्दगी की करुणता यह है कि हम भी 'पुल' और 'पुश' में गोता खाते रहते हैं।

मतलब कि जहाँ खींचना चाहिए वहाँ 'धक्का' लगाते हैं, और जहाँ धक्का लगाने की आवश्यकता है वहाँ 'खींचते' हैं।

दरअसल दाम्पत्य जीवन के झगड़े 'पुल' और 'पुश' के कारण ही होते हैं। पति या पत्नी स्वयं ही पकड़े हुए बात को छोड़ने को तैयार नहीं होते और खींचतान होती रहती है। जो दोनों में से एक अपनी जीत, हठ, अहंकार के अभिमान को 'पुश' यानि कि धक्का मारकर क्षमा का मार्ग अपना ले तो झगड़ा आगे बढ़ने से रुक सकता है!

दो पड़ोसियों के झगड़े में, दो मित्रों के झगड़े में, या ऑफिस या संस्था के सदस्यों में आपसी व्यवहार में मतभेद और मनमुटाव दिखाई पड़े, उसमें 'पुल' और 'पुश' ही जवाबदार होता है। हरेक अपनी बात को पकड़ के रखता है और दूसरे की बात को धक्का लगाता है। सामने वाला पक्ष और दूसरा पक्ष भी ईंट का जवाब पत्थर से देने को तत्पर रहता है और सामने वाले पक्ष के व्यक्ति की बात, सूचन, समाधान वृत्ति या नम्रता को धक्का लगाता है जिससे सम्बंध सुधरने की तमाम प्रक्रियाएँ नगण्य हो जाती हैं।

मुझे एक पुलिस स्टेशन का किस्सा याद आता है। पुलिस इंस्पेक्टर समाधान वृत्ति वाला था, इसलिए दो पड़ोसियों के बीच मारामारी की फरियाद को दर्ज करने से पहले दोनों के बीच समाधान हो जाए और सुखद अंत हो ऐसा ही वो सोचता था। मार खाने वाले ने कहा कि चलो साहेब, आप कहते हो ऐसा मैं सबकुछ भूल जाऊँ, लेकिन उसने मुझे मारा, उसका दु:ख व्यक्त तो करना ही चाहिए ना। मार खाने वाला खुद का अहम् वापिस खींचने को तैयार था।

लेकिन मारने वाला व्यक्ति खूब व्यंग्य मिजाजी था। क्षमा मांगने की बात आई, उतने में ही उसके अहंकार को ठेस पहुँची और उसने उसको कहा: 'अभी मैने तुझे मारा ही कहाँ है? अभी तो मारना बाकी ही है!' तब दूसरे व्यक्ति ने पुलिस इंस्पेक्टर की हाजिरी में ही विरोधी पर नम्रता दिखाई और कहा कि ले, मार दे मुझे!

समाधान होने वाली बात की बाजी बिगड़ गई। इंस्पेक्टर ने मारने वाले व्यक्ति को कड़क शब्दों में धमकाया और पुलिस को उसे अरेस्ट करने के लिए सूचित किया। इतने में ही विरोध करने वाला घबरा गया और सॉरी व्यक्त करते हुए मार खाने वाले से माफी मांगने लगा, उसे गले लगा लिया और कहा: 'कि चल, मेरी गाड़ी में ही बैठ, मैं तुझे तेरे सगे-सम्बन्धियों के पास छोड़ दूँ।' इंस्पेक्टर खुश हो गया। उनकी मेहनत व्यर्थ न जाने से वो आनंदित हुआ।

मनुष्य को ज़िन्दगी में सुखी होने के लिए कहाँ 'पुल' (खींचना) और कहाँ 'पुश' यानि कि व्यर्थ बात को धक्का मार दिमाग और हृदय से निकालना है, उस समझ के विवेक का उपयोग करना ज़रूरी है। ज़िन्दगी के हर मोड़ पर यदि आप समझपूर्वक 'पुल' और 'पुश' को आज़माएँ तो आपका बेड़ा पार हो सकता है!

एक किस्सा है कि एक बालक अपनी दादी को मिलने गया। वैसे तो वो चंचल स्वभाव वाला व मस्तीखोर था, लेकिन दादी को मिलने से पहले उसने दादी के घर की दीवार में लटकते हुए विष्णु का बड़ा चित्र देखा, जिसमें नीचे लिखा हुआ था कि ईश्वर आपको देख रहा है। चित्र देख वो बालक अपने स्वभाव के विरुद्ध बिल्कुल शांत होकर दादी के पास बैठा। दादी उसके स्वभाव के प्रति सचेत थी। दादी ने कहा: 'बेटा, क्या बात है? आज आप इतना शांत क्यों हैं?'

बालक ने कहा: 'मुझे लगता है कि यहाँ मुझे सद्वर्तन करना चाहिए, क्योंकि ईश्वर मुझे देख रहा है। मैं तूफान करूंगा तो वो मुझे सज़ा देगा।'

वास्तव में तो ईश्वर हम सबको इतना चाहता है कि वो हमें देखे बिना रह ही नहीं सकता! ईश्वर के पास एक ही आदर्श है 'पुल' यानि कि खींचना, अपने प्रति आकर्षित करना। कैसे भी धृष्ट को भी धक्का मारने के लिए तैयार नहीं! वो सब तटस्थ पूर्वक निहार रहा है, क्योंकि वास्तव में मनुष्य उसकी ही तो संतान हैं ना!

कहाँ 'पुल' करना और कहाँ 'पुश' करना, उसके लिए पाँच बातें याद रखनी चाहिए...

1. ईश्वर सब देख भी रहा है और सुन भी रहा है। ऐसा समझ सद्वर्तन और वाणी की मधुरता सदा रखनी चाहिए।
2. कहाँ 'पुल' करना यानि खींचना, और कहाँ 'पुश' करना यानि कि धकेलकर बाहर निकाल देना, इतना विवेक अपना अंत:करण जानता है और गलत करने पर सचेत करता है।
3. ईश्वर मनुष्य को देखता है, ये मान्यता हमें ईश्वर खुश हो ऐसी भावना हममें प्रबल हो, इस ओर प्रेरित करती है।
4. जीवन में सुखी होना है तो क्षमा द्वारा व्यर्थ वस्तुओं को दिमाग से धक्का लगा दो।
5. अहंकार को धक्के का साधन बनाएंगे तो अहंकार ही आपको धक्के लगायेगा।

मक्थल-महबूबनगर। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में कोन्डई जी,बी.जे.पी. नेता, ब्र.कु. महादेवी, ब्र.कु. ज्ञानेश्वर,मा.आबू, ओमप्रकाश जी, ब्र.कु. संतोषी तथा अन्य।

वरंगल-तेलंगाना। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में आन्ध्र प्रदेश के पूर्व मंत्री बसवराजू सरय्या को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता।

मुम्बई-बोरीवली। महाशिवरात्रि पर आयोजित सोमनाथ दर्शन स्टॉल, स्पीरिच्युअल हीलिंग स्टॉल तथा शांति अनुभूति कक्ष का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में रती पाण्डेय,टी.वी. एंड फिल्म आर्टिस्ट, करण आनंद,टी.वी. एंड फिल्म आर्टिस्ट, पारस जतानिया,फेमस पोडियम फिनीशर ऑफ मैराथॉन, अभिजीत राणे,चीफ एडिटर ऑफ मुम्बई मित्र, ब्र.कु. दिव्यप्रभा तथा अन्य।

इन्दौर-कालानी नगर। महाशिवरात्रि पर आयोजित शिव दर्शन झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पूर्व महापौर उमाशशि शर्मा, विश्व ब्रह्म समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित योगेन्द्र महंत, ब्र.कु. जयंती तथा अन्य।

नीमच-म.प्र.। शिव जयंती पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में जिला वनमण्डलाधिकारी एस.के. गुप्ता, सी.आर.पी.एफ. के डी.आई.जी. राजीव रंजन कुमार, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. सुरेन्द्र, पूर्व म्युनिसिपल चेयरमैन अरविंद चोपड़ा, भाजपा महामंत्री संतोष चोपड़ा तथा अन्य।

इन्दौर-रामबाग। 81वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व न्यायाधीश प्रकाश केकरे, एस.ए.एफ. के पुलिस उपाधीक्षक सीरीकान्त शर्मा, प्लैटिनम कम्पाउंडर संतोष त्रिपाठी, स्टेट पुलिस के राजेन्द्र सिंह भदोरिया, बंगाली क्लब के जयन्त चौधरी तथा अन्य।

कामठी-नागपुर(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में मंचासीन हैं डॉ. राजकुमारी मेहता, डॉ. कलंत्री, प्रा. कविता नाथ, सुषमा राखडे, रुपाली मेश्राम, डॉ. राधा टेमके, जिप सदस्या कुंदा आमधरे, ब्र.कु. प्रेमलता तथा अन्य गणमान्य महिलायें। सभा में शहर की महिलायें कार्यक्रम का लाभ लेते हुए।

मुम्बई। वर्ल्ड कांग्रेस में डॉ. प्रो. मेहेर मास्टर मूस,अध्यक्ष,ज़ोरोस्ट्रियन कॉलेज संजान ब्र.कु. रमेश, डॉ. शोभना तथा डॉ. गीतांजलि को स्पेशल अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए।

मुम्बई-डोम्बिवली। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान गायकवाड जी,अध्यक्ष,पत्रकार संघ,क.डो.म.पा. को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. शकू।

राजकोट-राजनगर। महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित शिव संदेश शांति यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. रीटा। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

इन्दौर-सुदामा नगर। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए रविन्द्र सिंह,आई.डी.ए. ऑफिसर, अनिल मराटे,बैंक मैनेजर, डॉ. आर.बी. दूबे, ब्र.कु. दामिनी तथा अन्य।

आणंद-सर्चलाइट। 'स्वस्थ तन, स्वस्थ मन तनाव मुक्ति शिविर' का उद्घाटन करते हुए डॉ. धीरज परमार,प्रिन्सीपल,आणंद एज्युकेशन कॉलेज,आणंद, मनसुख भाई मेघाजी,ऑफिसर,अमूल डेयरी, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. कुसुम,यू.एस.ए. तथा ब्र.कु. कुसुम,यू.के.।

पनवेल-महा.। महाशिवरात्रि पर नील हॉस्पिटल में आयोजित 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य अभियान, फ्री हेल्थ चेकअप, फ्री सेमिनार तथा फ्री योगशिविर' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए विधायक प्रशांत ठाकुर। साथ हैं ब्र.कु. तारा, डॉ. उमेश तागडे, डॉ. शुभदा नील, नगराध्यक्ष चारुशीला घरत, तालुका आरोग्य अधिकारी डॉ. राजेन्द्र इटकरे, नगरसेविका डॉ. सुरेखा मोहकर, महिला आघाडी महासचिव नीलम सिंग तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण।

सम्मान सिर्फ सामने का नहीं...

गतांक से आगे...

प्रश्न:- ऊपर से जो सम्मान होती है वो भी नज़र आने लगती है।

उत्तर:- डर है। डर के कारण लोग सम्मान देते हैं। लेकिन गुस्सा करने से जो एनर्जी उत्पन्न होती है वह सिर्फ मुझे ही खाली नहीं करती लेकिन साथ वाले को भी खाली कर देती है। आप किसी भी ऑफिस में देख लो जहां सीनियर की आदत है 'गुस्सा' करने की तो जो उनके नीचे काम करते हैं वो उनके बारे में तो सामने में 'येस सर करेंगे' फिर पीछे में.....?

तो उस सम्मान का क्या फायदा, यह तो हमारे आत्म-सम्मान को कम करता है। एटलिस्ट मेरे सामने इसने मेरी बात मान ली, येस सर कहा, जैसे ही मैं बाहर गया, दरवाज़ा बंद हुआ आपस में....!

सम्मान वो होता है कि चाहे वो हैं, चाहे वो नहीं हैं, लेकिन सब अच्छा महसूस करें। और ये तब होगा जब उनके साथ सम्बन्ध सम्पर्क में अच्छी एनर्जी एक्सचेंज हो रही है। जिनको हम सारा समय दर्द वाली, गुस्से वाली एनर्जी भेज रहे हैं तो हमें यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वो हमारे लिए अच्छा सोचते होंगे। हम उतने मज़बूत नहीं हैं जो हम उनकी डांट सुनते जायें और अच्छा फील करते जायें। हमें हमेशा पॉज़ीटिव सोचना होगा और दूसरों को पॉज़ीटिव एनर्जी देनी होगी, तभी लोग मुझ पर 'विश्वास और सम्मान' करेंगे।

सम्मान माना आप मुझसे अपेक्षा रखते हैं। अगर आप मुझसे अपेक्षा करते हैं तो मैं और भी खुले रूप से आप लोग के समीप आ जाऊंगी। मतलब मेरा जब मन चाहे, मेरे अंदर जो है वो मैं आपके साथ शेयर कर सकूं। अगर मैं आपसे कोई बात छुपाती हूँ या मैं आपके सामने बात नहीं कर सकती हूँ इसका मतलब है कि मैं आपसे डरती हूँ।

आज ऑफिस कल्चर में पारदर्शिता क्यों नहीं है? हम यह हमेशा कहते हैं कि प्रबंध कार्यशाला में पारदर्शिता होनी चाहिए। अगर मैं बॉस को जाकर कुछ बताती हूँ तो डांट पड़ेगी, डांट सुनने के लिए मुझे सच बोलना चाहिए, तब तो उल्टा गलती पकड़े जाने के बाद भी मैं क्या कर रही हूँ? झूठ बोल रही हूँ। हम ऑफिस में झूठ क्यों बोलते हैं? सिर्फ उस डांट से बचने के लिए, तो एक हम झूठ बोलते हैं और दूसरा उसका दोष किसी और पर डाल देते हैं। सर, मेरी गलती नहीं थी ये तो उन्होंने ऐसा-ऐसा किया। वास्तव में इससे एंटायर वर्क फोर्स के अंदर जो टीम की जो भावना है वो खराब हो जाती है।

अगर बॉस नहीं डांटे तो परिस्थिति दूसरी भी हो सकती है। अगर आप किसी को उससे अलग होकर देखते है कि एक ने गलती की, दूसरा उसको डांट रहा है, तो हमें किसकी गलती बड़ी लगेगी? जो डांट रहा होता है उसकी गलती बड़ी लगेगी।

क्योंकि दूसरे जो हैं उसको तो हम बहुत आसानी से स्वीकार कर लेते हैं कि गलती तो हो ही जाती है, लेकिन जो डांट रहा है वो कभी भी हमें सही नहीं लगता, क्योंकि सबका आंतरिक स्वभाव है शांति, हम शांत रहना चाहते हैं। हमें गुस्सा कभी भी अच्छा नहीं लगता है, जब हमें कोई गुस्सा करते हुए ठीक नहीं लग रहा है तो जिसको वो गुस्सा मिल रहा होगा वो मेरे बारे में कैसा सोचता होगा? क्या इसे हम सम्मान कहेंगे?

लेकिन हम गुस्सा क्यों करते हैं, क्योंकि हमारे अंदर लचीलापन नहीं है। मेरे मन के अंदर लचीलापन नहीं है कि जो बाहर हो रहा है, वो मेरी अपेक्षाओं के साथ मेल नहीं होता है, तो ये किसकी कमज़ोरी है!

माना मैंने अपने जूनियर को कहा कि ये काम एक घण्टे में पूरा हो जाना चाहिए और काम एक घंटे में पूरा नहीं हुआ। काम होना चाहिए था एक घण्टे के अंदर, लेकिन सामने वाले को डेढ़ घण्टा लग गया या कई बार थोड़ा सा ज़्यादा भी लग गया तो क्या हुआ, उसने अच्छे से तो किया है ना। अगर मैंने तुरंत गुस्सा कर दिया तो अगली बार वो काम ठीक से नहीं करेंगे। - क्रमशः

स्वास्थ्य

अनेक रोगों का एक त्रियोग

250 ग्राम मेथीदाना

100 ग्राम अजवाइन

50 ग्राम काली जीरी

उपरोक्त तीनो चीज़ों को साफ-सुथरा करके हल्का-हल्का सेंकना (ज़्यादा सेंकना नही) तीनों को अच्छी तरह मिक्स करके

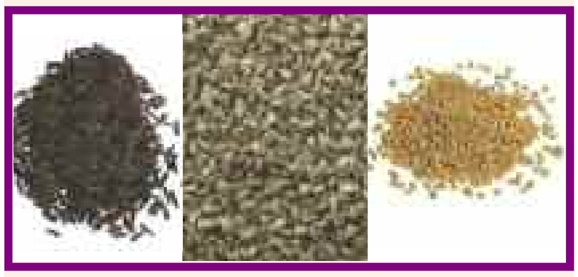

मिक्सर में पाउडर बनाकर डिब्बा-शीशी या बरनी में भर लेवें । रात्रि को सोते समय एक चम्मच पाउडर एक गिलास पूरा गुनगुने पानी के साथ लेना है।

गरम पानी के साथ ही लेना अत्यंत आवश्यक है। इसे लेने के बाद कुछ भी खाना पीना नहीं है।

यह चूर्ण सभी उम्र के व्यक्ति ले सकतें हैं।

चूर्ण रोज़-रोज़ लेने से शरीर के कोने-कोने में जमा पड़ी गंदगी (कचरा) मल और पेशाब द्वारा बाहर निकल जाएगी ।

पूरा फायदा तो 80-90 दिन में महसूस करेंगे, जब फालतू चरबी गल जाएगी, नया शुद्ध खून का संचार होगा। चमड़ी की झुर्रियाँ अपने आप दूर हो जाएगी। शरीर तेजस्वी, स्फूर्तिवाला व सुंदर बन जायेगा ।

इसके फायदे

1. गठिया दूर होगा और गठिया जैसे अनेक जिद्दी रोग दूर हो जायेंगे।
2. हड्डियाँ मज़बूत होंगी।
3. आँख का तेज बढ़ेगा।
4. बालों का विकास होगा।
5. पुरानी कब्जियत से हमेशा के लिए मुक्ति मिलेगी।
6. शरीर में खून दौड़ने लगेगा।
7. कफ से मुक्ति।
8. ह्रदय की कार्य क्षमता बढ़ेगी।
9. थकान नहीं रहेगी, घोड़े की तहर दौड़ते जाएंगे।
10. स्मरण शक्ति बढ़ेगी।
11. स्त्री का शारीर विवाह के बाद बेडोल की जगह सुंदर बनेगा।
12. कान का बहरापन दूर होगा।
13. भूतकाल में जो एलोपैथी दवा का साईड इफेक्ट हुआ है उससे मुक्त होंगे।
14. खून में सफाई और शुद्धता बढ़ेगी।
15. शरीर की सभी खून की नलिकाएँ शुद्ध हो जाएंगी।
16. दाँत मज़बूत बनेगा, इनेमल जीवंत रहेगा।
17. डायबिटीज़ काबू में रहेगी, डायबिटीज़ की जो दवा लेते हैं, वह चालू रखना है। इस चूर्ण का असर दो माह लेने के बाद से दिखने लगेगा।

जीवन निरोग, आनंददायक, चिंता रहित स्फूर्ति दायक और आयुष्यवर्धक बनेगा।

जीवन जीने योग्य बनेगा।

-डॉ. सरोन सोनी, मो.- 930151786

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आप इस दुनिया में, यह आपसे दिल से प्रार्थना है, कि यदि कोई भी कार्य करें, तो वह विश्व कल्याणार्थ ही हो, तभी आपकी किसी भी शक्ति का प्रयोग सार्थक है। नहीं तो दुनिया की तरह किसी भी बात की सिद्धि,आपके अंदर, अहम् को जन्म देती है, जो आगे चलकर एक बड़ा रूप धारण करेगी, जिसमें आपके अंदर किसी की बात भी नहीं जायेगी।

आप जब अच्छे कार्य हेतु अपने मन के पर्दे पर उसके प्रति भाव लाते हैं तो, समझो वहीं से कार्य होना प्रारम्भ हो जाता है। अंतर यह है कि आपको बस अंदर यह कॉन्फिडेंस डेवलप करना है, जो मैं चाहता हूँ, वो हो रहा है, लेकिन यदि उसमें थोड़ा भी ऊपर नीचे भाव हो, तो वह कार्य होता तो है, लेकिन उसके होने की संभावना में परसेन्टेज वाइज़ फर्क पड़ जाता है। इसलिए दृढ़ता की शक्ति डेवलप करने के लिए आपको निश्चय करना आना चाहिए।

इसका तरीका यह होता है कि आप बार-बार उसे लूप में रिपीट करें। अर्थात् पक्का करें। पक्का होने की भी कंडीशन है, कि आपने संकल्प किया, क्या वो अपने लिए है, या संसार के कल्याणार्थ है। उसी आधार से उसके अंदर तीव्रता आयेगी।

अगर विश्व कल्याणार्थ होगा, तो उससे आपके ऊपर स्वत: ही विश्व की सारी शक्तियाँ आपका कल्याण करेंगी। जिसमें नि:स्वार्थ भाव, उसके संकल्प भी तो ऐसे ही होंगे।

आज तक विश्व में जो भी महान हुए, उन्होंने ऐसे ही संकल्प उत्पन्न किए होंगे, जिससे लोगों की जबान पर उनका ही नाम होगा। आप कोई भी कार्य में थोड़ा, शेयर करो, कन्ट्रीब्यूट करो, दुनिया भी आपके कदमों पर चलने की कोशिश करेगी।

भक्ति में जितने भी भक्त हुए, उन्होंने कल्पना मात्र से, भगवान से, उन अपने इष्टों का चित्र अपने मानस पटल पर बनाकर अनेकानेक प्राप्तियाँ करते रहे। जिसको उन्होंने सिद्धि का नाम दिया। नाम लिया, देवी हाज़िर। इस क्रिया का प्रयोग आप अपनी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने में कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-17-2017

1	2		■	3			■	4	
■		■	5		■	■	6		■
7			■	■	■	8			
9		■	10	11		■	■		■
	■	■	12		■	13	14	■	■
■	15	16		■	17			■	18
■	19			■	■	■	■	20	
■	■	21			■	22	23		
24	25	■	■	■	26			■	
■	27				■	■		■	■

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. मनमोहक, आकर्षक (4)
3. ....की रीति निभाने का सहज तरीका (2)
4. नित्यप्रति किया जाने वाला कर्म (4)
6. कीमती सामान, धन-सम्पत्ति (2)
7. मुकाबला, होड़, प्रतियोगिता (3)
10. माया बड़ी....है, बड़ी प्रबल है (5)
11. दशा, स्वास्थ्य, कुशल मंगल (2)
13. गीता, आर्द्र (2)
14. लीन, मग्न (2)
15. खास भारत....सारी दुनिया को पावन बनाना है (2)
16. पैर, पग, पद्चिन्ह (3)
18. फिर तो तुमको नीचे....ही है कला कमती होनी ही है (4)
20. अवसर, संयोग (2)
22. ज़्यादा, अधिक (2)
23. प्रतिलिपि, अनुकृति (3)
25. किस समय, कभी (2)

बायें से दायें

1. रिश्ता, नाता, सम्बन्ध (3)
3. ....आन मिलो, साजन (3)
4. सतयुग और त्रेतायुग है ब्रह्मा का....(2)
5. बुद्धि, अक्ल, राय (2)
6. नाम....शान की बीमारी से मुक्त बनो (2)
7. श्रावण मास (3)
8. एकरस स्थिति अर्थात् सदा अचल....नहीं (4)
9. मनाही, इन्कार (2)
10. संसार, जगत, दुनिया (3)
12. ताकत, शक्ति (2)
13. ....से नारायण नारी से लक्ष्मी (2)
15. आना, आने की क्रिया, आगमन (3)
17.....अर्थात् श्रेष्ठ मत (3)
19. कदम-कदम पर....तुम्हारी ये एहसास (3)
20. मृत्यु, दम तोड़ना (2)
21. ....सिंहासन पर हम आत्मायें, भाल (3)
22. ज्ञाता, जानने वाला (4)
24. मेरा तो....शिवबाबा दूसरा न कोई (2)
26. भगवान में विश्वास करने वाला (3)
27. ....के दिन भुला न देना, बालपन (4)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

छत्तरपुर-म.प्र.। प्रशासक वर्ग के लिए आयोजित 'आध्यात्मिकता से सुप्रशासन' विषयक सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. पूजा, कलेक्टर रमेश भण्डारी, एस.पी. ललित शाक्यावार, ब्र.कु. शैलजा तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

ग्वालियर-म.प्र.। ग्वालियर व्यापार मेले में अशासकीय प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार 'स्वर्ण पदक' ब्रह्माकुमारीज़ ग्वालियर को मिला। यह पुरस्कार अभय चौधरी,अध्यक्ष,जी.डी.ए., राकेश जादौन,अध्यक्ष,एस.ए.डी.ए., एस.एन. रूपला,आई.ए.एस. कमिश्नर, अनिल कुमार,आई.पी.एस. डॉ. संजय गोयल,आई.ए.एस. कलेक्टर तथा अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा प्राप्त करते हुए ब्र.कु. आदर्श बहन तथा ब्र.कु. प्रहलाद।

खंडवा-म.प्र.। 'मीडिया के समक्ष मूल्य व चुनौतियाँ' विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता, मूल्यानुगत मीडिया व राजी-खुशी के संपादक कमल दीक्षित, जलगांव के व्याख्याता डॉ. सोमनाथ वडनेरे, पत्रिका के स्थानीय संपादक राजीव जैन, नई दुनिया के ब्यूरो चीफ उदय मंडलोई, इंदौर से ब्र.कु. आस्था, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. शक्ति, ब्र.कु. अनिता, पत्रिका के डेस्क इंचार्ज पुष्पेन्द्र साहू तथा अन्य।

गरोठ-म.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि सहायक कलेक्टर अर्पित वर्मा, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. समिता तथा अन्य।

छाणी-वडोदरा। महाशिवरात्रि पर 'शिव संदेश आध्यात्मिक महोत्सव' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. नरेन्द्र, ब्र.कु. भावना, कॉर्पोरेटर वंदना खांडे, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु. कपिला, गुरूद्वारा के ग्रंथसाहेब श्री रक्तरसिंधजी, सद्गगुए क्रेडिट सोसायटी के एम.डी. कालीदास राणा तथा ब्र.कु. कपिल।

पचोर-म.प्र.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में सर्व धर्म के प्रतिनिधियों के साथ शुभ प्रतिज्ञा करते हुए ब्र.कु. वैशाली।

पालनपुर-गुज.। महाशिवरात्रि कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित हैं केन्द्रीय राज्यमंत्री हरिभाई चौधरी, परम पूज्य संत श्री रामरतन जी महाराज, परम पूज्य संत श्री सीताराम बापू, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. भारती तथा डॉ. हितेश ठाकर।

वैंगलोर-बसावनगुड़ी। महिला दिवस पर 'वुमेन इन द चेंजिंग वर्ल्ड ऑफ वर्क' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए चन्द्रा रेड्डी,लायन्स क्लब प्रेसीडेंट, डॉ. बेला,साइंटिस्ट एंड प्रोफेसर,जूलॉजी,बैंगलोर युनिवर्सिटी, श्रीमती सुनंदा,रिटा.डेप्युटी कमिश्नर,कमर्शियल टैक्सेस, ब्र.कु. अम्बिका, डॉ. उषा, श्रीमती कंचना,प्रिन्सीपल,सिन्धी कॉलेज, श्रीमती रमामणि,सी.ए.ओ. एंड फाइनेंशियल एडवाज़र,बी.एम.टी.सी. तथा अन्य।

भोपाल-अरेरा कॉलोनी। महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. अवधेश बहन,ज़ोनल डायरेक्टर, मंजू गुप्ता, नेशनल वाइस प्रेसीडेंट,अग्रवाल महासभा, डॉ. शशि तिवारी,प्रिन्सीपल कोपल कॉलेज, डॉ. अनुपमा महेश्वरी,प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर,इग्नू, डॉ. वेरलक्ष्मी,प्रोफेसर,आनंद विहार कॉलेज, डॉ. रश्मि गोयल,असिस्टेंट सी.एम.ओ.,एम.पी.एस.ई.बी. हॉस्पिटल, ब्र.कु. रानी तथा अन्य।

बिलासपुर-छ.ग.। महिला दिवस पर सी.आर.पी.एफ. भरनी द्वारा आयोजित 'घरेलू हिंसा एवं आत्मनिर्भरता' कार्यक्रम में सम्बोधित करने के पश्चात् राजयोगिनी ब्र.कु. छाया को मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित करते हुए अस्मिता घोष,सी.एम.ओ.,सी.आर.पी.एफ., श्रीमती,डी.आई.जी. तथा सी.आर.पी. एफ. की अन्य गणमान्य महिलायें।

राजनांदगांव-छ.ग.। महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सशक्तिकरण के लिए आध्यात्मिकता' विषयक स्नेह मिलन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा शोभा सोनी, राज्य महिला आयोग की सदस्य रेखा मेश्राम, ब्र.कु. पुष्पा, गायत्री परिवार की साधिका एवं माहेश्वरी महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा राधा देवी लड्ढा, फूलबासन यादव, अधिवक्ता शारदा तिवारी तथा अन्य।

आत्मविश्वास बनाम अहंकार

- ब्र.कु. विश्वनाथ

आत्मविश्वास एवं अहंकार में बड़ा अंतर है। दोनों एक दूसरे के विपरीत एवं विरोधी हैं। आत्मविश्वासी स्वयं पर विश्वास करता है, जिसका अर्थ है-अपनी आत्मा पर संपूर्ण आस्था, जो सदा अजर, अमर, शुद्ध, बुद्ध एवं मुक्त है, जो कभी नष्ट नहीं होती है, जो कभी मरती नहीं है, जो कभी हारती नहीं है एवं सदैव उपस्थित रहती है। इस आत्मतत्व पर आस्था और विश्वास करना ही आत्मविश्वास है।

इसके विपरीत अहंकारी का विश्वास उन गुणों पर ज़्यादा होता है, जिनका अस्तित्व तात्कालिक और क्षणभंगुर हो, जैसे- उसका शारीरिक सौष्ठव व सौंदर्य, उसकी संपदा एवं आर्थिक क्षमता इत्यादि। अहंकारी को लगने लगता है कि उसके जैसा कोई नहीं है इस संसार में, केवल वही है जो सर्वश्रेष्ठ है एवं सब पर भारी है। यही अंतर दोनों के मध्य है।

आत्मविश्वास होने का मतलब है-स्वयं पर गहरा विश्वास, अटूट आस्था, अडिग निष्ठा, और किसी भी परिस्थिति में निराश और हताश न होना। आत्मविश्वास एक सकारात्मक गुण है, विधेयात्मक चिंतन है, और जब यह व्यवहार में उतरता है तो शालीनता, विनम्रता एवं श्रेष्ठता के रूप में परिभाषित होता है। इसके दोनों छोर सकारात्मक की ओर बढते हैं, कहीं भी इसमें नकारात्मकता प्रवेश नहीं कर पाती है। आत्मविश्वास किसी अन्य पर आश्रित नहीं होता, बल्कि वह मात्र स्वयं पर व ईश्वर पर भरोसा करता है। औरों पर भरोसा किया जाए तो पता नहीं वे किस मोड़ पर, किस विशेष क्षण में साथ छोड़ जाएँ और सारा-का-सारा कार्य अधूरा छूट जाए या फिर बीच में ही समाप्त हो जाए। परंतु जब स्वयं पर विश्वास किया जाता है तो ऐसी अप्रिय स्थिति कदापि नहीं आ पाती है।

जिनको स्वयं पर भरोसा है, स्वयं पर विश्वास है, वे कुछ भी करने में समर्थ होते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं, जो उन्हें असंभव लगता है, उसे करने में वे संदेह करते हों। असंभव तो उनके लिए कुछ भी नहीं है, क्योंकि उनका विश्वास स्वयं पर शत-प्रतिशत होता है। वे दूसरों के भरोसे आगे नहीं बढ़ते हैं। उनका अपने पर विश्वास उस साहस को पैदा करता है, जिसके सामने कितनी भी बड़ी कठिनाइयाँ क्यों न हों उन्हें डिगा नहीं पाती हैं, कितनी भी बड़ी बाधाएँ सामने खड़ी क्यों न हो जाएँ, उन्हें वे हँसते-हँसते लांघ जाते हैं, कितनी भी भारी विपत्तियाँ क्यों न चुनौती बनकर सामने आ जाएँ, वे उन्हें आसानी से पार कर जाते हैं। आत्मविश्वासी के साहस के सामने विपत्तियाँ भी टिक नहीं पाती हैं। वे न तो किसी से डरते हैं और न ही उन्हें कोई डिगा पाता है। वे तो हर चुनौती के सामने पर्वत जैसे अटल और अडिग खड़े रहते हैं और कभी-कभी तो उनके साहस एवं जज़्बे के सामने चुनौतियाँ एवं कठिनाइयाँ भी उनसे डरने-घबराने लगती हैं।

आत्मविश्वास रखने वालों को चुनौतियाँ और कठिनाइयाँ भी सौ गुना साहसी बनाकर जाती हैं और विपत्तियाँ एवं बाधाएँ हज़ार गुना बढ़ाकर जाती हैं। जैसे सोने को आग में डाला जाता है तो उसमें और भी निखार आ जाता है, उसकी चमक बढ़ जाती है और उसका मूल्य बढ़ जाता है। उसी तरह अपने ऊपर विश्वास करने वाले के लिए तो ऐसी अनगिनत बाधाएँ उसे निखारने आती हैं, उसके साहस को उभारने आती हैं, उसके सामर्थ्य को बढ़ाने आती हैं।

वह इनसे डरता नहीं, बल्कि और भी निडर बनकर उनका सामना करने के लिए सहर्ष तैयार रहता है। उसका ध्येय होता है-विजय के लिए सदा आगे बढ़ना और अपने अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति करना। यदि किसी तरह से परिस्थितिवश उसे थोड़ी देर के लिए रुकना या पीछे हटना भी पड़ा तो ऐसी स्थिति में वह पल भर विश्राम करके, अपने में नई स्फूर्ति भरकर संपूर्ण साहस के साथ फिर से संघर्ष की उसी दिशा में चल पड़ता है।

आत्मविश्वासी के लिए जीत अथवा हार का कभी कोई मूल्य नहीं होता है। इसलिए वह हार कर भी कभी नहीं हारता है। हारना या हार की कल्पना करना केवल वे करते हैं, जिनको स्वयं पर विश्वास नहीं होता। जिसे स्वयं पर विश्वास होता है, वह हार की कल्पना भी नहीं करता, वह जब तक उसकी अंतिम साँस चुक न जाए और जब तक उसकी देह से प्राणों का एक-एक कतरा बह न जाए, वह सदा लड़ता रहता है। ऐसे दुर्धर्ष योध्दा की भला कभी हार हो सकती है! और वह जब जीतता है या सफलता प्राप्त करता है तो उसे ईश्वरीय अनुदान मानता है व सफलता का सारा श्रेय सर्वशक्तिमान ईश्वर को प्रदान कर देता है। इसे औरों में बाँटने, अपने श्रेय, समृद्धि व सम्मान के द्वारा दूसरों की पीड़ा निवारण के लिए भरसक प्रयत्न करता है। इस प्रकार सफलता के लिए उसका संघर्ष भी सद्गुण संवर्धन की एक प्रक्रिया बन जाता है। सफलता पाकर उसके अंदर अहंकार पैदा नहीं होता है, वह इठलाता, इतराता घूमता नहीं है, बल्कि औरों के लिए अर्पित कर देता है।

आत्मविश्वासी को न तो सफलता उन्मादी बनाती है और न विफलता उसे डराती है और बाधा बनती है। विफलताएँ तो उसे अपने दुर्गुणों को पहचानने में और उन्हें दूर करने में मददगार साबित होती हैं। वह देखने लगता है सूक्ष्मता से कि कहाँ कमी हुई, जिस वजह से उसे विफलता हाथ लगी और वह उसी क्षण उन सभी कमियों को दूर करते हुए सफलता के लिए प्रयत्न करने लग जाता है। इस कार्य में न तो वह थकता है और न रुकता है, वह सदा प्रयत्नशील रहता है।

इसके विपरीत अहंकारी व्यक्ति सफलता पाते ही सातवें आसमान में उड़ने लगता है। सफलता उसे गर्वोन्मत कर देती है और वह मदोन्मत हो जाता है। सफलता के क्षण में वह स्वयं को सर्वोपरि मानकर दूसरों को तुच्छ एवं क्षुद्र समझने लगता है। उसके विचार बड़े गर्वीले हो जाते हैं और उसका व्यवहार अशिष्टता, गर्वोन्मतता एवं उद्दंडता से भर जाता है। वस्तुत: सफलता को पचा पाने की क्षमता उसके पास नहीं होती है और वह आत्ममुग्ध होकर घूमता रहता है।

इसीलिए अहंकारी व्यक्ति को जीवन में जब असफलता या विफलता मिलती है तो वह गंभीर रूप से हताश, निराश एवं व्यथित हो उठता है। अहंकार एक ऐसे गुब्बारे के समान है, जिसमें हवा भरी होती है, कोई ठोस तत्व नहीं होता है, इसलिए तो वह एक विफलता रूपी पिन के चुभने से ही फट जाता है। अहंकार को जब एक चोट पडती है तो वह बिलबिलाने लगता है, बौखलाने लगता है और ऐसी स्थिति देर तक बनी रहे तो वह घबराने लगता है। असफलताओं की श्रृंखला से वह इतना हताश और निराश हो जाता है कि उसके मन में आत्महत्या जैसे कायरता के भाव निरंतर आने लगते हैं। अहंकार एक आभासी तत्व होने के कारण उसका कोई वास्तिविक अस्तित्व नहीं होता हैं, परंतु अहंकारी इस झूठे एवं आभासी तत्व को सब कुछ मानकर आगे बढ़ता है और ये जब गिरने लगते हैं, टूटने लगते हैं तो उसे निराशा व हताशा हाथ लगती है।

आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सुख का जीवन जीने के बजाय, फूल पर पाँव रखने की अपेक्षा अँगारों पर चलने का साहस होना चाहिए। फूल पर सभी चल लेते हैं, यहाँ तक कि एक नादान बच्चा भी इस पर खेलने में संकोच नहीं करता है, किंतु अँगारों पर चलने का साहस विरले ही दिखा पाते हैं। जो व्यक्ति कठिनतम कार्यों को भी अपने करने योग्य बना लेता है, सरल एवं सहज बना लेता है, भीषणतम चुनौतियों को भी आसान कर लेता है, वह अपनी शक्ति पर विश्वास करता है

- शेष पेज 7 पर...

योग में स्थिति कैसे हो?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

आज परमात्मा के मानने वाले बहुत लोग कहते हैं कि सभी जीव–प्राणी परमात्मा ही के रूप हैं। इस बात पर अच्छी तरह विचार करने से आप इसी निर्णय पर पहुँचेंगे कि सभी को परमात्मा के नाना रूप मानने से तो मन को एकाग्र करने का प्रश्न ही नहीं उठता। योग में स्थिति प्राप्त करने के लिए तो मन को अनेकत्व से निकाल कर एक परमपिता परमात्मा पर ही एकाग्र करना होता है। अत: पहले तो यह जानना चाहिए कि परमात्मा विभु (सर्व व्यापक) नहीं है बल्कि अणु–सम है, एक ज्योति–बिन्दु है, वह एक है, उसका रूप एक है, उसका धाम एक है और उस एक ही की स्मृति में 'एक–टिक' स्थित होना ही योगाभ्यास करना है। उस एक परमात्मा ही में टिकने वाला 'ज्ञान' ऐसा अंकुश है जो कि मन–रूपी मीनाक्ष हाथी को ठीक रास्ते पर ले जा सकता है। उस ज्ञान के अतिरिक्त अन्य जितने भी तथा–कथित ज्ञान हैं उनसे आत्मा की योग में स्थिति नहीं हो सकती।

अत: योग में सहज रीति स्थित होने के लिए पहले तो परमप्रिय परमात्मा के नाम 'शिव', रूप 'बिन्दु–सम ज्योतिर्लिंगम', धाम 'ब्रह्म लोक', सम्बन्ध 'परमपिता' इत्यादि का निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। योग में स्थिति ध्रुव तभी होगी जब ज्ञान की नींव पक्की होगी। जैसे दीपक पर चिमनी (chimney) चढ़ी होने से दीपक की लौ बुझती नहीं है; वैसे ही योग के साथ ज्ञान होने से आत्मा की ज्योति बुझती नहीं है।

योग में स्थिति के लिए अभ्यास की आवश्यकता

कोई मनुष्य कह सकता है कि -''परमपिता परमात्मा का यह वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने पर भी मेरा मन तो फिर भी भोगों ही की ओर भागता है; इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए?'' इसका समाधान यह है कि योग का अभ्यास बार–बार करना चाहिए। योग में दृढ़ स्थिति प्राप्त करने के लिए कोई कठिन क्रिया, कोई आसन, कोई प्राणायाम इत्यादि करने की आवश्यकता नहीं है परन्तु परमपिता परमात्मा की स्मृति के अभ्यास ही की परम आवश्यकता है। इस अभ्यास से पुराने संस्कार ढ़ीले होते जायेंगे, उनका वेग घटता जायेगा और मन को ईश्वरीय स्मृति की टेव पड़ती जायेगी और उसे ईश्वरीय आनन्द का अनुभव आकर्षित करने लगेगा। अत: मन की उच्छृंखलता से घबराकर अभ्यास को छोड़ना कभी नहीं चाहिए, बल्कि अभ्यास को जारी रखना चाहिए।

थोड़े ही समय में मन ईश्वरीय स्मृति में स्थित होने लगेगा।

कुछ ही समय में यह अभ्यास इतना परिपक्व हो जाएगा कि निद्रा में भी परमात्मा के ही सुन्दर स्वप्न आयेंगे। जैसे लोभी मनुष्य को नींद में भी पैसा याद आता है, कामी व्यक्ति को स्वप्न भी स्त्री के ही आते हैं, वैसे ही योगी को स्वप्न में भी परमप्रिय परमात्मा ही की याद आयेगी। इस पर हमें एक दृष्टांत याद आता है–

एक बार कपड़े का एक व्यापारी दिन–भर कपड़ा बेचने के धन्धे से थक कर रात को चादर तान कर सो गया। अभी सोये हुए उसे कुछ ही समय हुआ था कि वह खर्राटे लेने लगा। खर्राटों की आवाज़ सुनकर उसी कमरे में उसकी बूढ़ी माता जाग गई। इतने में ही उसे महसूस हुआ कि उसका बच्चा नींद में ही अपने ऊपर की चादर को दो हाथों के बीच खैंचकर वैसे ही फाड़ रहा है जैसे कि कपड़े के दुकानदार कपड़ा फाड़ा करते हैं। उसने तुरन्त आवाज़ दी–''अरे बेटा, यह क्या करता है? तू चादर क्यों फाड़ रहा है? बेटा, तुम्हें निद्रा में भी दुकान की, ग्राहकों की और कपड़े के थानों ही की याद आती है?''

बेटा करवट बदलते हुए बुड़बुड़ाया–''माँ तू मेरे दुकान के कामों में दखल न दिया कर। अब ग्राहकों का समय है। मुझे कपड़ा बेचने दे।''

ठीक इसी तरह यदि हम ईश्वर की स्मृति में रहने का धन्धा अथवा अभ्यास करें और विषयों के आकर्षणों को इसमें हस्तक्षेप न करने दें तो जागृत अवस्था की तो बात ही अलग रही, स्वप्न में भी हमें आध्यात्मिक और आनन्ददायक दृश्य ही दिखाई देंगे।

आत्मविश्वास बनाम... - पेज 6 का शेष

और वह अपने चारों ओर की परिस्थितियों को अनुकूल बना लेता है।

जो भीषण कठिनाइयों एवं असंभव चुनौतियों को चीरते हुए चल पड़ते हैं तो समझना चाहिए कि उनका आधा कार्य पहले ही पूर्ण हो गया, जबकि अहंकारी व्यक्ति केवल कल्पना किया करता है और उससे डरने, घबराने लगता है और उस कार्य को कोई कर देता है तो उसका श्रेय स्वयं पर ले लेता है। अत: कठिनतम कार्य से, विपरीत परिस्थितियों से कभी भागना नहीं चाहिए, बल्कि उनका जमकर सामना करना चाहिए। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है और अहंकार गलता है।

आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि अपने असीम एवं दिव्य सामर्थ्य को हम पहचानें और उसी के अनुरूप कार्य करें। इस तथ्य से अवगत होना चाहिए कि हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के वंशज हैं, हमारे अंदर उन्हीं का सामर्थ्य एवं शक्ति सन्निहित है। इस सत्य पर हमें अटल विश्वास और गहरी आस्था रखनी चाहिए। आत्मविश्वास से भरे हुए व्यक्ति के जीवन में तीन ही मंत्र होते हैं-संकल्प, साहस और विजय। उसके लिए संघर्ष के क्षण खुशियों से भरे त्योहार के समान होते हैं, जिनमें आत्मविश्वास व ईश्वरविश्वास का भरपूर स्थान होता है।

थाने -जी.बी. रोड(महा.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम के दौरान ईश्वरीय स्मृति में बन्ते लामा जी,बुद्धिस्ट मॉन्क, आचार्य सोमवीर जी,आर्य समाज, बीबी दवीन्दरजीत कौर,गुरुनानक दरबार, दिनेश भाई चौधरी,आई माता मंदिर, नरेन्द्र भाई जैन,जैन समाज, ब्र.कु. गोदावरी, ब्र.कु. जगदीश, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. हर्षा तथा अन्य।

पुणे-सदाशिवपेठ। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए सुनंदा आर. एडके,उत्तम वक्ता,लेखिका,व्यवस्थापक,टी.वी. एंड रेडियो निवेदिका,प्राध्यापक,प्राचार्य,चित्रपट अभिनेत्री, राम एडके, ब्र.कु. लता, ब्र.कु. वंदना तथा ब्र.कु. शामकांत।

गोधरा-गुज.। 'दिव्य जीवन दर्शन आध्यात्मिक मेले' के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए विद्या हरवाणी,प्रेसीडेंट,नगर सेवा सदन, ब्र.कु. शीलू,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका,मा.आबू, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु. सुरेखा,ब्र.कु. कपिला, ब्र.कु. रतन, ब्र.कु. नरेन्द्र तथा ब्र.कु. शैलेष।

नातेपुते-सोलापुर(महा.)। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में यदूराजगिरी महाराजजी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. जयश्री, ब्र.कु. रानी तथा ब्र.कु. निशा।

सूरत-वालाजी रोड। शिव जयंती पर आयोजित 'स्वच्छता जागृति' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. फाल्गुनी, अनिल भाई,बिस्किट वाला, जीगीश भाई दवे,ब्रह्म समाज प्रमुख तथा अन्य।

मध्य प्रदेश। समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'स्वस्थ भारत अभियान' में ब्र.कु. ओंकार तथा ब्र.कु. दत्तात्रय,शांतिवन। ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. हेमलता तथा ब्र.कु. दीपिका।

शिरूर-महा.। महाशिवरात्रि महोत्सव में नगरपरिषद के नवनिर्वाचित नगराध्यक्ष वैशाली ताई वाखारे, उपनगराध्यक्ष माणिकचंद, उद्योग समूह के प्रकाश जी धाडीवाल, सर्व नगरसेवक सत्कार के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. अर्चना, ब्र.कु. शकुंतला तथा अन्य।

वर्धा-महा.। 'महिला प्रभाग द्वारा आयोजित 'संस्कृति की संरक्षक नारी' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सिंधी रेलवे सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. माधुरी, राजुल बहन, सिंधी रेलवे की नगराध्यक्षा संगीता रोंडे, प्राथमिक आरोग्य केन्द्र के वैदकीय अधिकारी वसीम कुरैशी तथा एस.आर. पीपंकर।

वड़ौदा-अटलादरा। 'व्यापार में सफलता-एक नया दृष्टिकोण, व्यस्त त्रस्त ज़िन्दगी से मस्त ज़िन्दगी की ओर' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. गीता,हेड क्वार्टर कोऑर्डिनेटर,बिज़नेस एंड इंडस्ट्री विंग, अजय रान्काजी,सी.ई.ओ.,ज़िडेक्स इंडस्ट्रीज़ प्रा. लि., शिवलालजी गोयल,एम.डी.,कच्छ कैमिकल इंडस्ट्रीज़ लि., वी. नागेश, लक्ष्मणजी गुरवानी, जयरामभाई सेवानी, यश पवार, ब्र.कु. राजसिंह, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।

वावधन-महा.। नये नगर सेवक दिलीप वेडेपाटील को सम्मानित करने के पश्चात् उनके साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. भारती तथा अन्य।

बिलासपुर तिफरा-छ.ग.। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'बारह ज्योतिर्लिंग और अमरनाथ दर्शन महोत्सव' के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक सियाराम कौशिक, ब्र.कु. रानी तथा अन्य।

चरोदा-छ.ग.। मुलाकात के दौरान डॉ. सरोज पाण्डेय,राष्ट्रीय महासचिव,बी.जे.पी. को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. शिवानी तथा ब्र.कु. किरण।

मन्दसौर-म.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'सद्भावना समारोह' में दीप प्रज्वलित करते हुए पोरवाल समाज से प्रवीण गुप्ता, दशपुर जागृति संगठन से डॉ. पुराणिक, आध्यात्मिक चेतना मंच से भागीरथ दशोरा, समाजसेवी प्रकाश रातडिया, ब्राह्मण समाज से रमेश चन्द्र चन्द्रे, विश्व हिन्दु परिषद से महिला संयोजिका विद्या उपाध्याय, बी.जे.पी. से महिला प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्षा बिन्दु चन्द्रे, पंजाबी समाज से निरांत बग्गा, मुस्लिम समाज से अजीज उल्ला खान, रामचरित मानस के मर्मग्य रामगोपाल शर्मा, ब्र.कु. समिता तथा शहर के अन्य गणमान्य जन।

मुम्बई-दिन्डोशी(मलाड)। महिला दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में नवनिर्वाचित कॉर्पोरेटर साधना माने, ब्र.कु. कुन्ती, गावड़े बहन तथा अन्य।

कैसी होती है भगवान की गिफ्ट...?

- गतांक से आगे...

दसवें अध्याय में, विभूति विस्तार योग बताते हैं भगवान। असीम सत्य की अपार महिमा सुनाते हैं। बल, सौन्दर्य, ऐश्वर्य या उत्कृष्टता प्रदर्शित करने वाली समस्त अद्भुत घटनायें चाहे वह इस लोक में है या आध्यात्मिक जगत में, परमात्मा की दैवी शक्तियां एवं ऐश्वर्यों की असीम अभिव्यक्तियां हैं। समस्त कारणों के कारण स्वरूप परमात्मा समस्त जीवों के परम पूज्यनीय हैं। कितना ऐश्वर्य और कितनी विशालता है उसका प्रदर्शन करते हैं भगवान और अर्जुन को रियलाइज़ कराने का प्रयत्न करते हैं।

पहले श्लोक से लेकर सातवें श्लोक तक भगवान की विभूति और योग शक्ति का कथन तथा उनके जानने का फल बताया गया है।

आठवें श्लोक से लेकर ग्यारहवें श्लोक तक फल और प्रभाव सहित भक्ति योग का कथन है।

बारहवें श्लोक से लेकर अठारहवें श्लोक तक अर्जुन भगवान की स्तुति तथा विभूति और योग शक्ति कहने के लिए प्रार्थना करता है।

उन्नीसवें श्लोक से लेकर बयालीसवें श्लोक तक भगवान अपनी विभूतियों का और योग शक्ति का कथन सुनाते हैं।

इस तरह से भगवान अपने प्रिय अर्जुन को अपनी उत्पत्ति का रहस्य युक्त श्रेष्ठ ज्ञान देते हुए कहते हैं कि ''न देवता और न ही महर्षिगण उनकी उत्पत्ति का रहस्य जानते हैं।'' संसार में जब देवतायें नहीं जानते, महर्षिगण नहीं जानते तो मनुष्य क्या जानेगा! ये तो सोचने की बात है। इसीलिए भगवान ने बहुत स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि मेरी उत्पत्ति का रहस्य युक्त श्रेष्ठ ज्ञान न देवता जानते हैं और न महर्षिगण जानते हैं। मोह रहित, पाप रहित, ज्ञान-ध्यान से युक्त मनुष्य ही मुझ अजन्मा, अनादि के यथार्थ रूप को जान लेते हैं। पुन: भगवान ने अपने अव्यक्त स्वरूप के विषय में स्पष्ट किया कि मैं ''अजन्मा हूँ, अनादि हूँ'' और कहा कि मनुष्यात्मा में जो गुण विद्यमान हैं, वह मेरे द्वारा दिये गए हैं। हर एक के अंदर कोई न कोई ऐसे गुण ज़रूर हैं। इसीलिए दुनिया में भी ये कहावत है कि 'किसी व्यक्ति के अंदर निन्यानवे अवगुण हों लेकिन एक गुण तो होगा ही' वो एक दो गुण जितने भी हैं वो ईश्वर द्वारा प्राप्त है। वो ईश्वर की सबसे बड़ी गिफ्ट होती है मनुष्य जीवन को अर्थ पूर्ण बनाने के लिए। जिसके लिए कहा जाता है कि भगवान ने कोई न कोई ऐसी विशेषता या गुण अवश्य दिया होगा। तो भगवान यही बात स्पष्ट करते हैं कि मनुष्यात्मा में जो गुण विद्यमान है, वह मेरे द्वारा दिया गया है। दैवी संस्कार है, जो मैंने संकल्प से उन्हें प्रदान किया है। भगवान कैसे देता है। वह तो अजन्मा है, अव्यक्त है तो देगा कैसे? वो कोई शारीरिक चीज़ नहीं है, स्थूल चीज़, भौतिक चीज़ नहीं है जो उठा करके दे दे।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

भगवान संकल्पों के द्वारा, उसके अंदर वो दैवी शक्ति उसको गिफ्ट के रूप में देते हैं। इसीलिए ये सब मेरी संकल्प की रचना है। जो पुरुष ज्ञान के आधार से मेरी इस विभूति और योग को जानता है, वह निश्चयात्मक योग-युक्त हो जाता है। उसमें कुछ भी संशय नहीं रहता। उसमें क्षण भर भी संशय का संकल्प नहीं आता है। भगवान है या नहीं है, कैसा है क्या है? जिसने उसको जान लिया समझ लिया वह निश्चयात्मक हो जाता है। ज्ञान के आधार से जानने की बात पुन: दोहराई है कि जिनका मन निरंतर मुझमें रमा हुआ है, जिनका जीवन मेरी सेवा में समर्पित है, जो दूसरों को ज्ञान देते हैं, आपस में भी ज्ञान-चर्चा करते हैं, वह प्रसन्नता एवं दिव्य आनंद का अनुभव करता है। आपस में भी जब हम एक-दूसरे से बात करें, तो शुभ चिंतन ही करें। जैसे कि कहावत है ''परचिंतन पतन की जड़ है, आत्मचिंतन उन्नति की सीढ़ी है।'' जितना हो सके हम एक-दूसरे के प्रति भी उन्नति की बातें करते रहें। इसीलिए भगवान ने कहा कि जो आपस में भी ज्ञान-चर्चा करते हैं वो प्रसन्नता एवं दिव्य आनंद का अनुभव करते हैं। उन्हें मैं ज्ञान प्रदान करता हूँ कि कैसे वो मुझ तक आ सकते हैं। ये ज्ञान परमात्मा ही देता है। कोई मनुष्य नहीं दे सकता है। क्योंकि ये किसी के वश की बात ही नहीं है। भगवान को जानकर के पहचानना। जब तक वो खुद आकर के अपना परिचय न दे तब तक कैसे उसको जानेंगे। - क्रमश:

आचार विचार से... - पेज 2 का शेष

में भी कलयुग की प्रवेशता है। प्रजा को भी वक्रवाणी अच्छी लगने लगी है, इसलिए कोई नेता दूसरे नेता के लिए उल्टे बोल का प्रयोग करता है तो जनता तालियाँ बजाती है। लोकशाही तो विवेक पर्व होना चाहिए।

लुईस ने कहा है कि ''आज का मानव बीमार है। बीमारी बढ़ी है, उसका कारण न सिर्फ रोग-जंतु आदि हैं बल्कि मनुष्य भी खुद इसका ज़िम्मेवार है। मनुष्य अपने हृदय में कलयुग के स्वागत के लिए ऊँचे आसन सुरक्षित रखता है। कलयुग अपने साथ असत्य, प्रपंच, लोभ, लालच, विकृतियों, अहंकार जैसे खूब बड़े रसूखदार लेकर आता है और मनुष्य को परोसता है जिसमें से जो कुछ चाहिए या मनुष्य को अनुकूल हो, वो पसंद करने की छूट देता है। सत्य को मैंने दरवाज़े के बाहर बिठा दिया है, इसलिए उस तरफ झाँकने की ज़रूरत नहीं है। सत्य के हाथ खाली हैं, उल्टा ही तुम्हारे पास से कुछ मांगेगा।

लोग आज कलयुग की बातों में आ गये हैं। लुईस ऐल कहते हैं कि अपने शरीर की बीमारी हम स्वयं ने ही खड़ी की है। हर एक व्यक्ति स्वाधिकार और अपराध भाव से पीड़ित रहता है। क्रोध, ईर्ष्या, अपराध भाव बहुत नुकसान करता है।

स्वयं को बीमार होने से बचाने के लिए यह बातें अपने आप में स्वीकार कर लें -

1. मन को स्वस्थ और स्वच्छ रखें। सात्विक विचारों का आहार लें।
2. ईर्ष्या, द्वेष, निंदा, अहंकार, वैर वृत्ति के विषयों को मन में प्रवेश न होने दें।
3. आशंकित होना छोड़, संयम और सदाचार को जीवन में अग्रिम स्थान दें।
4. जिह्वा पर सम्पूर्ण नियंत्रण, स्वाद, मौज-मस्ती को भी त्यागें और पर निंदा को भी त्यागें।
5. प्राकृतिक जीवन और नि:स्वार्थ प्रेम को जीवन में अग्रिमता दें।
6. रोज़ आधा घण्टा शांति के वातावरण में बैठें और अपने आपसे बातें कर अपने अंदर छिपी खूबियों को निहारें और उसे व्यवहार में अपनायें।

ख्यालों के आईने में...

किसी ने चाणक्य से पूछा...
ज़हर क्या है..?
चाणक्य ने जवाब दिया !!
हर वो चीज़ जो ज़िन्दगी में आवश्यकता से अधिक होती वही ज़हर है ! फ़िर चाहे वो ताकत हो, धन हो, भूख हो, लालच हो, अभिमान हो, आलस्य हो, महत्वाकांक्षा हो, प्रेम हो, आवश्यकता से अधिक 'ज़हर' ही है!

सोच ये ना रखें की मुझे रास्ता अच्छा मिले, बल्कि ये होना चाहिए कि मैं जहाँ पाव रखूँ वो रास्ता अच्छा हो जाए; क्यूँकि जो अपने कदमों की काबिलियत पर विश्वास रखते हैं, वो ही अक्सर मंज़िल पर पहुँचते हैं!

कथा सरिता

समझदारी किसान की...

किसी गाँव में चार मित्र रहते थे।
चारों में इतनी घनी मित्रता थी कि हर समय साथ रहते, उठते बैठते, योजनाएँ बनाते।
एक ब्राह्मण, एक ठाकुर, एक बनिया और एक नाई था। पर कभी भी चारो में जाति का भाव नहीं था, गज़ब की एकता थी। इसी एकता के चलते वे गाँव के किसानों के खेत से गन्ने चने आलू आदि चीज़ें उखाड़ कर खाते थे। एक दिन इन चारो ने किसी किसान के खेत से चने के झाड़ उखाड़े और खेत में ही बैठकर हरी हरी फलियों का स्वाद लेने लगे। खेत का मालिक किसान आया, चारो की दावत देख उसे बहुत क्रोध आया। उसका मन किया कि लट्ठ उठाकर चारो को पीटे, पर चार के आगे एक! वो स्वयं पिट जाता, सो उसने एक युक्ति सोची।

चारो के पास गया, ब्राह्मण के पाँव छुए, ठाकुर साहब की जयकार की, बनिया महाजन से राम जुहार और फिर नाई से बोला- देख भाई! ब्राह्मण देवता धरती के देव हैं, ठाकुर साहब तो सबके मालिक हैं, अन्नदाता हैं, महाजन सबको उधारी दिया करते हैं, ये तीनों तो श्रेष्ठ हैं, तो भाई इन तीनों ने चने उखाड़े सो उखाड़े पर तू! तू तो ठहरा नाई, तूने चने क्यों उखाड़े? इतना कहकर उसने नाई के दो तीन लट्ठ रसीद किये। बाकी तीनों ने कोई विरोध नहीं किया क्योंकि उनकी तो प्रशंसा हो चुकी थी।

अब किसान बनिए के पास आया और बोला- तू साहूकार होगा तो अपने घर का, तू पण्डित जी और ठाकुर साहब तो नहीं है ना! तूने चने क्यों उखाड़े? बनिये के भी दो तीन तगड़े तगड़े लट्ठ जमाए। पण्डित और ठाकुर ने कुछ नहीं कहा।

अब किसान ने ठाकुर से कहा- ठाकुर साहब! माना आप अन्नदाता हो पर किसी का अन्न छीनना तो ग़लत बात है। अरे पण्डित महाराज की बात दीगर है, उनके हिस्से जो भी चला जाये दान पुण्य हो जाता है, पर आपने तो बटमारी की! ठाकुर साहब को भी लट्ठ का प्रसाद दिया। पण्डित जी कुछ बोले नहीं, नाई और बनिया अभी तक अपनी चोट सहला रहे थे। जब ये तीनों पिट चुके तब किसान पण्डित जी के पास गया और बोला- माना आप भूदेव हैं पर इन तीनों के गुरू घण्टाल आप ही हैं, आपको छोड़ दूँ, ये तो अन्याय होगा। तो दो लट्ठ आपके भी पड़ने चाहिए।
मार खा चुके बाकी तीनों बोले हाँ हाँ, पण्डित जी को भी दण्ड मिलना चाहिए। अब क्या था, पण्डित जी भी पीटे गए।
किसान ने इस तरह चारो को अलग अलग करके पीटा। किसी ने किसी के पक्ष में कुछ नहीं कहा, उसके बाद से चारो कभी भी एक साथ नहीं देखे गये।
मित्रों, पिछली दो तीन सदियों से हम मनुष्यों के साथ यही होता आया है, कहानी सच्ची लगी हो तो समझने का प्रयास करो और अगर कहानी केवल कहानी लगी हो तो आने वाले समय के लट्ठ तैयार हैं।

भाग्य की चाभी किसके पास?

एक पान वाला था। जब भी पान खाने जाओ ऐसा लगता कि वह हमारा ही रास्ता देख रहा हो। हर विषय पर बात करने में उसे बड़ा मज़ा आता। कई बार उसे कहा कि भाई देर हो जाती है, जल्दी पान लगा दिया करो पर उसकी बात ख़त्म ही नहीं होती।
एक दिन अचानक कर्म और भाग्य पर बात शुरू हो गई। तक़दीर और तदबीर की बात सुन मैंने सोचा कि चलो आज उसकी फ़िलॉसफ़ी देख ही लेते हैं। मैंने एक सवाल उछाल दिया। मेरा सवाल था कि आदमी मेहनत से आगे बढ़ता है या भाग्य से? और उसके जवाब से मेरे दिमाग के सारे जाले ही साफ़ हो गए।
कहने लगा,आपका किसी बैंक में लॉकर तो होगा? उसकी चाभियाँ ही इस सवाल का जवाब हैं। हर लॉकर की दो चाभियाँ होती हैं। एक आपके पास होती है और एक मैनेजर के पास। आपके पास जो चाभी है वह है परिश्रम और मैनेजर के पास वाली भाग्य। जब तक दोनों नहीं लगतीं ताला नहीं खुल सकता। आप कर्मयोगी पुरुष हैं और मैनेजर भगवान। आपको अपनी चाभी भी लगाते रहना चाहिये। पता नहीं ऊपर वाला कब अपनी चाभी लगा दे। कहीं ऐसा न हो कि भगवान अपनी भाग्यवाली चाभी लगा रहा हो और हम परिश्रम वाली चाभी न लगा पायें और ताला खुलने से रह जाये ।

‡egefOeeq< j

अश्वत्थामा के सम्बन्ध में आधा झूठ बोलने के कारण दंड स्वरूप युधिष्ठिर को कुछ समय के लिए नरक ले जाया गया। वहाँ अनेक प्राणियों को दु:ख दण्ड से कराहते देखकर उनका हृदय दया से भर आया और वे साथ ले जाने वाले देवदूतों से बोल उठे - ''इन पीड़ितों की सेवा करने के लिए मैं भी नरक में ही रहूंगा।'' देवदूत: ''राजन्, ये पापी लोग हैं। इन्हें नरक भुगतना ही पड़ेगा। आप पुण्यात्मा हैं, इसलिये आपका यहां रहना संभव नहीं।'' युधिष्ठिर: '' तो इन्हें भी स्वर्ग ले चलो।''
देवदूत : ''यदि आप अपना पुण्य इन्हें दे दें तो ये स्वर्ग जा सकते हैं।'' युधिष्ठिर ने खुशी-खुशी अपना पुण्य उन दुखियों को दान कर दिया और स्वयं सदा नरक में रहना स्वीकार कर लिया। स्वर्ग के स्वामी इन्द्र उन अकेले नरक में पड़े हुए युधिष्ठिर के पास आये और कहा- ''आपने अपने पुण्य का दान कर दिया। उस दान का जो नया पुण्य आपने कमाया है उसके फलस्वरूप आप फिर स्वर्ग के अधिकारी हो गये। चलिए।'' अपने द्वारा किया गया सत्कर्म पुण्य का परिणामकारी होता है और पुण्य दान अभिष्ठ फलदायी होता है ।

भागा हाथ आया भाग्य

एक सेठ जी थे - जिनके पास काफी दौलत थी। सेठ जी ने अपनी बेटी की शादी एक बड़े घर में की थी। परन्तु बेटी के भाग्य में सुख न होने के कारण उसका पति जुआरी, शराबी निकल गया, जिससे सब धन समाप्त हो गया। बेटी की यह हालत देखकर सेठानी जी रोज़ सेठ जी से कहती कि आप दुनिया की मदद करते हो मगर अपनी बेटी परेशानी में होते हुए उसकी मदद क्यों नहीं करते हो? सेठ जी कहते कि जब उनका भाग्य उदय होगा तो अपने आप सब मदद करने को तैयार हो जायेंगे...।
एक दिन सेठ जी घर से बाहर गये थे कि, तभी उनका दामाद घर आ गया। सास ने दामाद का आदर-सत्कार किया और बेटी की मदद करने का विचार उसके मन में आया कि क्यों न मोतीचूर के लड्डूओं में अशर्फियाँ रख दी जाये... यह सोचकर सास ने लड्डूओं के बीच में अशर्फियाँ दबा कर रख दी और दामाद को टीका लगा कर विदा करते समय पाँच किलो शुद्ध देशी घी के लड्डू जिनमें अशर्फियाँ थीं, दिये...। दामाद लड्डू लेकर घर से चला, दामाद ने सोचा कि इतना वज़न कौन लेकर जाये, क्यों न यहीं मिठाई की दुकान पर बेच दिये जायें और दामाद ने वह लड्डू का पैकेट मिठाई वाले को बेच दिया और पैसे जेब में डालकर चला गया।
उधर सेठ जी बाहर से आये तो उन्होंने सोचा कि घर के लिये मिठाई की दुकान से मोतीचूर के लड्डू लेता चलूं और सेठ जी ने दुकानदार से लड्डू मांगे...मिठाई वाले ने वही लड्डू का पैकेट सेठ जी को वापिस बेच दिया। सेठ जी लड्डू लेकर घर आये। सेठानी ने जब लड्डूओं का वही पैकेट देखा तो सेठानी ने लड्डू फोड़कर देखे, अशर्फियाँ देख कर अपना माथा पीट लिया। सेठानी ने सेठ जी को दामाद के आने से लेकर जाने तक और लड्डूओं में अशर्फियाँ छिपाने की बात कह डाली... सेठ जी बोले कि भाग्यवान मैंने पहले ही समझाया था कि अभी उनका भाग्य नहीं जागा... देखा मोहरें ना तो दामाद के भाग्य में थीं और न ही मिठाई वाले के भाग्य में... इसलिये कहते हैं कि भाग्य से ज़्यादा और... समय से पहले न किसी को कुछ मिला है और ना मिलेगा! इसीलिये ईश्वर जितना दे उसी में संतोष करो... झूला जितना पीछे जाता है, उतना ही आगे आता है। एकदम बराबर। सुख और दु:ख दोनों ही जीवन में बराबर आते हैं। ज़िंदगी का झूला पीछे जाए, तो डरो मत, वह आगे भी आएगा।

मुम्बई-थाणे(श्री नगर)। महाशिवरात्रि के अवसर पर कल्प नगरी मैदान में आयोजित 'शिवरात्रि महा उत्सव-त्रिवेणी संगम आध्यात्मिक मेले में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करते हुए ब्र.कु. गोदावरी। साथ है अजय अशर,चेयरमैन एंड एम.डी.,अशर बिल्डर, नानजी भाई खेमजी भाई ठक्कर, धर्मू वंजानी,ट्रेज़रर,चेम्बर ऑफ स्मॉल स्केल इंडस्ट्री, कुलदीप सिंह भिन्द्रा,ट्रस्टी,गुरुद्वारा, अशोक जज्ञासी,बी.जे.पी. सेक्रेट्री, मनीषा कुलकर्णी,वर्ल्ड ह्युमन राइट्स प्रोटेक्शन्स एसोसिएशन, ब्र.कु. लाजवन्ती, ब्र.कु. सीता तथा अन्य ब्र.कु.भाई बहनें।

केशोद-गुज.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् शुभ प्रतिज्ञा करते हुए धारासभ्य अरविंदभाई लाडाणी, डॉ. प्रो. प्रविणभाई गजेरा, एडवोकेट दिनुभाई देवाणी, डॉ. रमाबेन देवाणी, ब्र.कु. रूपा, ब्र.कु. हर्षा तथा अन्य।

इन्दौर-मुखर्जी नगर। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में पार्षद संतोष गोर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमा।

इन्दौर-मुखर्जी नगर। नवनिर्मित 'ज्ञान प्रकाश भवन' का रिबन काटकर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. छाया, ब्र.कु. चन्द्रकला जयन्त चौधरी तथा अन्य।

इस्लामपुर-महा.। महाशिवरात्रि पर शिव पूजन करते हुए शिवानंद शिवाचार्य महाराज, बोधानंद महाराज तथा ब्र.कु. शोभा। साथ हैं अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

इन्दौर-वेंकटेश नगर। महाशिवरात्रि के अवसर पर जन-जन को बाइक रैली के माध्यम से शिव संदेश देते हुए बड़ी संख्या में ब्रह्माकुमार भाई।

बस, डिप्रेशन छू मन्तर

आज डिप्रेशन शब्द बहुत पॉपुलर है, जहाँ डिप्रेशन है वहाँ लोग दिन भर बातों को लेकर परेशान रहते हैं; ये परेशानी कभी बच्चों की, कभी पैसों की, कभी किसी इमोशन की, कभी फीलिंग्स की, क्या करें, कैसे जीएं। ये बातें कितनी पक्की हो चुकी हैं। होंगी भी क्यों नहीं, क्योंकि रियलाइज़ेशन खत्म है। क्यों ऐसा है, हम उसकी गहराई में चलते हैं...

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

दुनिया में एक कहावत है कि ''खाली दिमाग, शैतान का घर''। आज आपको लगता है कि सभी बिज़ी हैं, हमें ऐसा कम लगता है। अगर आपके बिज़ी शेड्यूल को ब्रीफ करें तो कह सकते हैं कि आप सुबह उठते, नहाते, ऑफिस जाते। आकर थोड़ा बहुत टी.वी. देखते, मन करता तो थोड़ा मित्र-सम्बन्धियों से मिल लेते हैं। यही आपकी चीज़ें रोज़ आपकी ज़िन्दगी में चलती हैं। ये आपका रुटीन वर्क है, जो करना है।

समस्या यह है नहीं, समस्या है कि आपका रियलाइज़ेशन ज़ीरो प्रतिशत है, क्या, कि ये सारा कर्म है, वो है किसके लिए। चाहे कमा रहे, चाहे खा रहे, चाहे खेल रहे, ये सब कुछ देह के अर्थ हैं। ज़िन्दगी का मकसद आप बदलते भी तो रहते हैं। कभी कहते बस ज़िन्दगी का मकसद है अच्छी नौकरी मिल जाए। मिल गयी, अब थोड़ा अच्छा घर मिल जाए, वो भी मिल गया। ऐसे आप करते जाते, ज़िन्दगी के पचास साल भी गुज़र जाएं तो भी इच्छाओं की तृप्ति हो रही है, नहीं ना! कारण इनके ना मिलने से डिप्रेशन! आपको भी ये बातें पता हैं कि इन चीज़ों से शांति मिलनी नहीं, बल्कि अशांति बढ़ती ही है, फिर भी उन्हीं से मिलने ना मिलने से आप पूरी तरह से दुःखी हैं।

आप विश्व भ्रमण करके देखो, जिनके पास सब कुछ है, वो भी डिप्रेशन में, जिनके पास नहीं है, वो भी डिप्रेशन में। कारण समझ आ रहा है, जिसके पास है, उन्हें उसको यूज़ करने नहीं आता है, क्योंकि उससे इतना अटैचमेंट है कि छोड़ने में डिस्टर्ब हो जाते हैं।

छोड़ने का डर इतना गहरा है कि उसे समझ नहीं पा रहे, और शोर मचाने लग जाते, अशान्त हो जाते। होना स्वाभाविक है। पता है ऐसा क्यों हो रहा है, क्योंकि आपकी ज़िन्दगी वो नहीं है, जो आपके पास है, बल्कि आपकी ज़िन्दगी वो है, जो आप खुद हैं। अगर खुद आप अंदर से अशांत हैं, परेशान हैं, दुःखी हैं, तो चीज़ें भी ऐसी ही होंगी ना।

जैसे ही आपने यह रियलाइज़ेशन लानी शुरु की, मैं हमेशा से शांत रहा हूँ, ये हमारी खुद की नेचर है, खुशी हमारी अपनी है। चीज़ों में, लोगों में, दुनिया में नहीं है। बस आप डिप्रेशन से बाहर। कोई भी आपको अशांत करने की क्षमता रखता नहीं है, करना है अपने मन को शांत। सेल्फ रियलाइज़ेशन आया, आत्मा शांत हुई, डिप्रेशन छू मन्तर।

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मैं अधर-कुमार हूँ, मेरे मन में एक शंका है कि बड़ी-बड़ी दादियों को व महारथी भाइयों को अंत में काफी शारीरिक भोगना हुई, तो हम जैसे गृहस्थियों का क्या होगा?

उत्तर: प्यारे भाई....यहाँ सबके कर्मों की कहानी अलग-अलग है। कर्मभोग न केवल पूर्व के पाप कर्मों का फल है, वरन् वर्तमान खान-पान का भी प्रभाव है। आजकल इंसान अन्न के साथ न जाने क्या-क्या खाता है। पानी भी दूषित है, पानी के साथ भी वह न जाने क्या-क्या पीता है। शरीर में गंदगी बहुत जाती है व कब्ज के कारण गंदगी रहती भी है, ज़रा सी असावधानी गड़बड़ कर देती है।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि बड़ों के पूर्व के पाप भी बड़े होते हैं। एक राजा का पल भर का गलत निर्णय अनेकों को कष्ट पहुँचा सकता है, यह बहुत बड़ा पाप हो जाता है, जबकि उतना पाप एक साधारण मनुष्य दो हज़ार वर्ष में भी नहीं करता।

तीसरी बात ये महानात्माएं इस कर्मभोग के समय भी अच्छी स्थिति में रहीं, उन्हें पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ। आपने सुना होगा कि साधारण आत्माएं बाबा के कमरे में बैठे-बैठे, बाबा को याद करते-करते शरीर छोड़ देती हैं, कई आत्माएं सवेरे चार बजे शरीर छोड़ती हैं। कई माताओं ने 18 जनवरी सवेरे देह छोड़ा। ये अपने-अपने गुप्त व सूक्ष्म पुरुषार्थ का, या किसी विशेष पुण्य का प्रभाव होता है। अतः किसी की किसी से तुलना करना उचित नहीं। आप अशरीरी होने का श्रेष्ठ पुरुषार्थ करें, पुण्यों की पूंजी बढ़ायें, आप भी सहज भाव से कष्ट रहित चोला उतार सकेंगे।

प्रश्न: मैं पैंतीस वर्ष का कुमार हूँ। लम्बे समय से ज्ञान में हूँ, बाबा पर सम्पूर्ण निश्चय है। पिछले दिनों मैं सख्त बीमार हुआ। कमरे पर अकेला था। पन्द्रह दिन बीमार चला, ब्राह्मण परिवार से तो ज़्यादा अपेक्षा नहीं थी, परन्तु मन में कमज़ोर संकल्प उठे कि साथी होना चाहिए। यह कमज़ोरी है, मैं जानता हूँ, परन्तु मैं जानना चाहता हूँ कि भविष्य में कभी भी मन डोलायमान न हो,क्या पुरुषार्थ करूँ?

उत्तर: यदि स्व-स्थिति श्रेष्ठ है तो परिस्थितियाँ ठहरेंगी ही नहीं। यदि बाबा से गहरा नाता है, ''बाबा मेरा है, मैं बाबा का हूँ,'' यदि उसे खुदा दोस्त बनाया है तो वह किसी न किसी के द्वारा आपको मदद अवश्य करायेगा। हुआ क्या है कि कुछ लोग ज्ञान में तो लंबा काल से चल रहे हैं, परन्तु तपस्या नहीं कर रहे हैं या यों कहें कि तपस्या हो नहीं पाती, इसलिये बाबा की मदद के अनुभव नहीं होते। कुमार ये भी सोचते हैं कि बहनें मदद करें। तो इसका मतलब ध्यान आत्माओं की ओर जाता है, बाबा की ओर नहीं, इसलिये भी अनुभव नहीं होता। जब भी कभी आप बीमार हों, ध्यान रहे मन की स्थिति को बिगाड़ें नहीं, धैर्यचित्त व सरलचित्त रहें और बाबा का सुप्रीम सर्जन के रूप में आह्वान करें, बस आपकी सभी समस्याएँ हल हो जाएंगी। याद रहे, संसार में मनुष्य, मनुष्य को सदा ही मदद नहीं कर सकता। मदद करती है अपनी श्रेष्ठ स्थिति।

प्रश्न: व्यर्थ संकल्पों की माया बड़ी प्रबल है। कभी-कभी मन में व्यर्थ का फ़ोर्स इतना तीव्र हो जाता है कि हम बहुत परेशान हो जाते हैं। इनसे किस प्रकार मुक्त हुआ जा सकता है?

उत्तर: जैसे जैसे समय समाप्त होने की ओर बढ़ता जा रहा है, अनेक मनुष्यों के मन के संकल्पों की स्पीड भी तीव्र होती जा रही है। इनसे मुक्त होने के लिए कुछ यह अभ्यास करें, व्यर्थ के फ़ोर्स को कम करने के लिए तीन मुख्य धारणाएं अपनाएं... पहला, साक्षीभाव - ड्रामा के ज्ञान को यूज़ करके चित्त को शांत रखने की आदत डालें। दूसरा, समर्पण भाव - मन के बोझ, चिंताएं व अन्य समस्याएं प्रभु अर्पण करके निर्संकल्प रहने की प्रैक्टिस करें। तीसरा, निष्काम भाव - मान की कामना व मैं-पन का त्याग कर शांत हो जाएँ। ये तीन बातें जीवन में सर्वाधिक उपयोगी हैं।

स्वमान का अभ्यास व नशा मन को शांत करता है, अतः स्वमान के नशे को व्यर्थ से मुक्ति का आधार बना लें।

प्रश्न: मैं एक बीस वर्षीय कुमार हूँ। मुझे माया से युद्ध करनी पड़ती है, पवित्र जीवन का सुख नहीं मिल रहा है। बार-बार विचार आता है कि ऐसे अकेला जीवन कब तक चलेगा। मेरी युद्ध की स्थिति है, मैं बाबा से दूर भी नहीं जाना चाहता। बताइये कैसे मैं आनन्दमय जीवन बनाऊं?

उत्तर: कुमार जीवन तो वरदानी जीवन है। कई गृहस्थी सोचते हैं कि जब हम अविवाहित थे, तब ज्ञान में आते तो कितना अच्छा होता। बस कई कुमार एक बड़ी गलती करते हैं, जानते हो कौन सी? न अमृतवेला योग करते न मुरली सुनते। सेवा में आगे रहते हैं, इसलिए जीवन में रुहानियत नहीं आती। बिना योगबल के पवित्रता का सुख नहीं लिया जा सकता। योगबल से ही तो कर्मेन्द्रियाँ शीतल होती हैं।

योगबल से ही सर्व विकार नष्ट होते हैं। यदि योग नहीं होता तो मनुष्य मनोविकारों को दबाये रखता है। ये दमन कष्टकारी होता है। अतः योग व ज्ञान का सुख लेने का दृढ़ संकल्प करो। योग अच्छा होने से ईश्वरीय सुख आपको तृप्तात्मा बनायेगी व आपके मन की चंचलता भी समाप्त होगी। आपको लगेगा नहीं कि आप अकेले हैं। खुदा दोस्त हर जगह आपको मदद करेगा। उससे आपको इतना प्यार मिलेगा कि दैहिक प्यार गौण हो जाएगा। इसलिए एकान्त में बैठकर स्वयं से इस तरह चिंतन करो - मैंने ये कुमार जीवन अपनाया है, महान त्याग किया है। अब मैं योगी बनकर विश्व में बाबा का नाम रोशन करुंगा।

एक बार पवित्रता का पथ अपना लिया तो बार-बार पीछे मुड़कर नहीं देखूंगा। भगवान ने मुझे 'पवित्र भव' का वरदान दिया है, मैं इस वरदान को फलीभूत करूंगा। मुझे प्रकृति को पवित्र वायब्रेशन्स देने हैं, मुझे दुखियों के दुःख हरने हैं, मुझे विश्व के लिए लाइट हाउस बनना है - यह चिन्तन आपको अन्तर्मुखी बनायेगा, आपका युद्ध समाप्त हो जाएगा और आपके दिल से आवाज़ निकलेगा कि मेरे जैसा अच्छा जीवन किसी का नहीं। बस दृढ़ता लाओ कि जिस पथ पर कदम रखा है उसमें समूर्ण सफल होना है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

उपलब्ध पुस्तकें

अपने विचार का असर अपने पर

- ब्र.कु. नेहा

जहाँ पर अग्नि जलती है वहां तीन प्रकार का प्रभाव होता है। एक तो धुआँ बनता है जो वायुमण्डल में फैलता है, दूसरा आस पास के वातावरण को गरमाहट मिलती है, रोशनी फैलती है तथा जिस पदार्थ से अग्नि जल रही है वह वस्तु नष्ट हो रही है या परिवर्तन हो रही है। ऐसे ही हमारे सभी विचार जाने अनजाने जो भी हमारे मन में चलते हैं वह सात प्रकार से प्रभावित करते हैं ....

1) जिस व्यक्ति, वस्तु व लक्ष्य के बारे में हम सोचते हैं , हमारे विचार उन्हें प्रभावित करते हैं।

2) हमारे सभी विचार हमारे सूक्ष्म संस्कारों में रेकॉर्ड होते रहते हैं।

3) हमारे विचारों से हमारा स्थूल शरीर भी प्रभावित होता है। हमारा शरीर और कुछ

नहीं, सिर्फ विचारों का स्थूल रूप है। हर संकल्प तरल रूप में परिवर्तित होता रहता है। यह जो हमारे मुख में थूक बनती है, यह भी हमारे विचारों का स्थूल रूप है। जैसे ही हम निम्बू शब्द उच्चारते हैं तो हमारे मुख में एक स्लाइवा बनता है, जैसे कोई गुड़ की बात करे तो वैसा स्लाइवा बनता है। ये सब सूक्ष्म विचारों का स्थूल रूप में होता परिवर्तन है, और इसी से ही हमारा शरीर बनता है। चाहे वे अच्छे विचार हों या बुरे विचार। ये सारी निर्मित स्थूल तरलता ही हमारे शरीर का निर्माण करती है। अगर हम बुरे विचार करते हैं तो शरीर बीमारी के रूप से क्षीण होता है। अगर अच्छे विचार करते हैं तो शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है।

4) हमारे जो सबसे नज़दीक भाई-बहनें या सगे सम्बन्धी हैं, चाहे घर में हैं या बाहर, वे भी हमारे विचारों से प्रभावित होते हैं। जैसे कि पौधे के तने में पानी डालने से उसकी टाल-टालियाँ व आखिरी कोमल पत्ते में भी वो पानी पहुँच जाता है, ठीक वैसे ही हम जैसा सोचते हैं, उसका प्रभाव सूक्ष्म में हमारे साथ जुड़े सभी परिवार व सगे-सम्बन्धियों व नियरेस्ट और डियरेस्ट को सीधे रूप से प्रभावित करता है।

5) हमारे विचार उनको भी प्रभावित करते हैं जिनके हम पूर्वज रहे हैं..... पूरे 84 जन्मों में जो हमारे माँ-बाप थे, सास-ससुर, पति-पत्नी या बेटा-बेटी थे, उनके हम पूर्वज कहलाते हैं। वे लोग चाहे अब कहीं भी भिन्न भिन्न जन्मों में हैं और हम नहीं जानते कि वे कहाँ हैं, लेकिन हमारा हर संकल्प अनजाने में उनको भी पहुँचता है और वह उसी अनुसार प्रेरित होते हैं ।

6) जिन लोगों के हम मुखिया हैं जैसे परिवार, समूह, संघ, ऑफिस, दुकान, व्यापार, टीचर, प्रशासक, नेता, मालिक, कर्मचारी, पुजारी वा संस्था के मुखिया रूप में कहीं ना कहीं वे सब लोग भी हमारे विचारों से प्रभावित होते हैं।

7) हमारे वर्तमान परिवार के लोगों पर हमारे विचारों का तुरंत प्रभाव पड़ता है जिसे हम शांति व आशांति के रूप में महसूस करते हैं। जैसे कि कभी भाई की बात को परिवार में स्वीकार नहीं किया गया और वो प्रत्यक्ष रूप में गुस्सा तो कर नहीं पाता, लेकिन वह गुमशुदा होकर एक कोने में बैठा रहता है। वो बोलता भले ना हो, फिर भी उसके मन में चल रहे विचार का प्रभाव उस घर में, जो कि सहज ही नेगेटिव ऊर्जा के रूप में महसूस होता है। ऐसे ही यदि पिता की मनोस्थिति ठीक ना हो, भले वो ना बोले, लेकिन उसका सीधा प्रभाव उसके परिवार पर पड़ता है, जो कि हम महसूस कर सकते हैं। तभी तो कहते हैं कि आज पिताजी का मूड ठीक नहीं है, आज उनसे कोई भी बात नहीं करनी चाहिए। जब उनका मूड ठीक होगा, तभी बात करेंगे।

अभी संसार नहीं बदल रहा उसका कारण और कुछ नहीं सिर्फ हम मन से नहीं बदले हैं। हम सिर्फ बोलते अच्छा है, मन से वैसे नहीं हैं। इसलिये लोग भी बोलते अच्छा हैं, करते उल्टा हैं। जैसे कि आज कल ऐसे लोग भी मिल जाएंगे, जो चापलूस होते हैं, जो कि बोलते तो बहुत मीठा और मधुर हैं, लेकिन मन में वो भाव नहीं होता जो बोलते हैं। इसलिए जो भी परिणाम के रूप में होता है वह ठीक विपरीत होता है। इसीलिए तो कहते हैं कि 'शत्रु से तो मैं खुद ही निपट लूंगा, प्रभु मुझे प्रशंसकों से बचाइए।'

एक टीचर स्कूल में बच्चों को बीड़ी ना पीने की शिक्षा दिया करता था। उसका सारे स्कूल में बहुत मान था। एक दिन उसने देखा कि कुछ बच्चे छिप कर बीड़ियाँ पी रहे थे। वह दुखित था, परंतु गहराई से सोचने पर उसने पाया कि वो खुद छिप कर बीड़ी पीता था। याद रखें कि आपका जीवन औरों के लिए प्रेरणा दायक है । लोग वह बनते हैं जो आप वास्तव में हैं ना कि वह जो आप बोलते वा सिखाते हैं।

आपके नकारात्मक संस्कार भी सभी पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं ।

- यदि आप डरपोक हैं, आलसी हैं, स्वार्थी हैं, पक्षपाती हैं या फिर केवल प्रचारक हैं, योगी नहीं क्रोधी हैं, शांत नहीं ईर्ष्यालु हैं, स्नेही वा सहयोगी नहीं हैं, तो आपको मानने वाले वही बनेंगे जो आप वास्तव में हैं.... चाहे आप कितना भी स्वयं को छिपा लें।

इसलिये अपने मूल गुणों शांति, प्रेम, सुख, आनंद के संकल्पों में रहिए क्योंकि बिना जाने भी लोग आपके विचारों के माध्यम से आपसे प्रभावित हो रहे हैं।

आपके शुद्ध सात्विक विचारों की खुशबू सारे वातावरण को महकाती है। यह भी महान सेवा है।

ऐसे बोलचाल में हम कहते हैं कि किसी के बारे में अशुभ ना बोलो, ना ही अशुभ सोचो। अत: हम जो हैं उसको हम जानें और हम जो चाहते हैं उसी को क्रियान्वित करें। हम क्या हैं, हम सत् चित् आनंद स्वरूप हैं। सत् माना सात गुण- सुख, शांति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, शक्ति, पवित्रता, इस समूह का नाम ही आत्मा है। हमारे और हर इंसान की ख्वाहिश या इच्छा भी ये है कि ये सारी चीज़ें हमारे जीवन में प्रचुर मात्रा में बनी रहे। तो हमें सूक्ष्म में हमारे भाव व मन के अंदर चलने वाले संकल्प की तरंगों को उसी दिशा में मोड़ना होगा जो हम चाहते हैं। तो संकल्प का कितना बड़ा महत्व है, उसी महत्व को समझ कर उसका सृजन करना है और दूसरों के प्रति वैसा ही भाव अर्थ सहित देना है।

अम्बिकापुर-छ.ग.। महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित 'सर्वधर्म सम्मेलन' के दौरान मंचासीन हैं छ.ग. विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टी.एस. सिंह देव, ब्र.कु. विद्या, फादर जेरॉम मिंज, भाजपा के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष मेजर अनिल सिंह, मौलाना सगीर अहमद तथा सिक्ख समाज के अध्यक्ष महेन्द्र सिंह टूटेजा।

पिंपरी-पुणे। महाशिवरात्रि पर आयोजित चार दिवसीय 'शिव प्रत्यक्षता महोत्सव' का उद्घाटन करने के पश्चात् चित्र में विधायक गौतम चाबुकस्वार, पूर्व उपमहापौर प्रभाकर वाघेरे, कॉर्पोरेटर संदीप वाघेरे, दब्बू आसवानी, उषाताई काले, कोमल मेवानी, आशाताई शेंडगे, बिज़नेसमैन अनिल आसवानी, दिलीप काले, सतीश आसवानी तथा ब्र.कु. सुरेखा।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित शिव संदेश शांति यात्रा में महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए ब्र.कु. आदर्श। साथ हैं ब्र.कु. भाई बहनें। कार्यक्रम में शरीक हुए घनश्याम पिरोनिया,विधायक,भांडेर, किरण सारदा,बिल्डर, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।

इन्दौर-प्रिकांको कॉलोनी। महाशिवरात्रि पर आयोजित शिव संदेश शांति यात्रा में शरीक हुए उत्पमा बहन, बैंक मैनेजर अनिल मराटे, ब्र.कु. दामिनी तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

राजकोट-रविरत्नापार्क। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. मुकेश पटेल, बिल्डर जमन दादा, मोटिवेशनल ट्रेनर मुकेश अम्बावानी, ब्र.कु. नलिनी, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. डिम्पल तथा अन्य।

अलकापुरी-वडोदरा। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित 'समाज उत्थान आध्यात्मिक सम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जया बहन ठक्कर, डॉ. विजय भाई शाह, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु. मीना, पी.बी. लाल, ब्र.कु. नरेन्द्र पटेल तथा डॉ. बठीजा।

ब्यावरा-म.प्र.। शिव जयंती के कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र द्वारा प्राप्त ईश्वरीय सौगात के साथ विधायक नारायण सिंह पंवार, बोहरा समाज के अध्यक्ष मुस्तफा भाई, सिक्ख धर्म के संतोख सिंह तथा हिन्दू धर्म के स्वामी शास्त्री जी। साथ हैं ब्र.कु. मधु तथा ब्र.कु. लक्ष्मी।

दुर्ग-छ.ग.। त्रिमूर्ति शिव जयंती पर 'शिव दर्शन प्रदर्शनी' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए प्रेमप्रकाश गुप्ता,समाजसेवी,रिटा. चीफ इंजीनियर, ब्र.कु. रीटा तथा अन्य भाई बहनें।

शहर के शताब्दी वर्ष एवं ब्रह्माकुमारी संस्थान् के दो दशक

संयुक्त रूप से कार्यक्रम का भव्य आयोजन

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. दीपक, ब्र.कु. गंगाधर, विधायक उल्लास पाटिल, सांसद संभाजी राजे, नगराध्यक्षा नीता माने तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण।

विश्व की सबसे बड़ी किताब का विमोचन करने के पश्चात् संभाजी राजे के साथ सम्माननीय अतिथिगण।

जयसिंगपुर-महा.। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा जयसिंगपुर शहर के शताब्दी वर्ष तथा सेवाकेन्द्र के दो दशक पूरे करने के अवसर पर छत्रपति शाहू महाराज **के द्वारा स्थापित इस शहर के ऐतिहासिक कार्यों व ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा मानवता के उत्थान के दिव्य कार्यों का वर्णन करने वाली 20 फुट ऊँची तथा 30 फुट चौड़ी विशाल किताब** का प्रकाशन किया गया। किताब द्वारा वर्ल्ड रेकॉर्ड बनाने पर 'वंडर बुक ऑफ रेकॉर्ड्स इंटरनेशनल लंदन' की भारत प्रतिनिधि डॉ.स्वर्णश्री गुर्रम ने सभी मेहमानों की उपस्थिति में ब्र.कु.रानी एवं ब्र.कु.सुनीता को प्रमाणपत्र, मोमेन्टो एवं बैज प्रदान किया।

इस अवसर पर सांसद संभाजी राजे ने शहर का नाम विश्व में प्रसिद्ध करने के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान समय की अराजकता के वातावरण में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आध्यात्मिकता से समाज में श्रेष्ठ मूल्यों का प्रसार करने का यह भागीरथ प्रयास बहुत ही सामयिक है। उन्होंने इस ईश्वरीय कार्य के द्वारा हो रहे मानव के दैवीकरण के कार्य को सराहा और उसे व्यापक रूप से बढ़ते जाने की शुभकामनाएँ की।

विधायक उल्लास पाटिल ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दिये जा रहे ज्ञान और योग की शिक्षा के माध्यम से शांति के प्रयास को सराहनीय बताया। उन्होंने ना सिर्फ शांति, बल्कि इसे व्यावहारिकता में आपसी समरसता की ओर महत्वपूर्ण कदम बताया।

माउण्ट आबू से आये ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु.गंगाधर ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान ऐसी अमूल्य निधि है जिससे जीवन सुख, शांति व श्रेष्ठ मूल्यों से सम्पन्न बन जाता है। उन्होंने कहा कि इतिहास के विभिन्न महा पुरुषों के किये कर्त्तव्य आज भी हमारे लिए आदर्श व अनुकरणीय हैं। परमात्मा के द्वारा समस्त संसार में शांति स्थापना का कार्य चल रहा है, और निकट भविष्य में भारत पुन: सिरमौर बनेगा।

नगर निगम की अध्यक्षा बहन नीता माने ने कहा कि आज शरीर से ज़्यादा मन की बीमारी दूर करने की आवश्यकता है और यह कार्य ब्रह्माकुमारी संस्था बहुत अच्छी रीति से कर रही है। क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. सुनीता ने अपने शुभ आशीर्वचन देते हुए कहा कि विश्व परिवर्तन का कार्य परमात्मा द्वारा किया जा रहा है, यह संदेश जन-जन तक पहुँचाकर मनुष्य मात्र में शांति सुख और समृद्धि को स्थापित करना है। कार्यक्रम में माननीय मेहमानों का स्वागत स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. रानी ने किया।

'शिव अवतरण' का संदेश सात करोड़ लोगों को पहुँचाने योजना का शुभारंभ

संभाजी राजे मोबाइल द्वारा 'शिव अवतरण' संदेश योजना का शुभारंभ करते हुए।

शिवरात्रि उत्सव के मौके पर जन-जन को 'शिव अवतरण' का संदेश सात करोड़ लोगों को पहुँचाने की योजना का शुभारंभ माननीय सांसद संभाजी राजे ने किया। ये जानकारी ब्र.कु. डॉ. दीपक ने दी।

सकारात्मक बनाएँ अपनी सोच

अयोध्या। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा 'गीता पाठशाला' साई का पुरवा दर्शन नगर में 'मिलन समारोह एवं समय की पुकार, सकारात्मक जीवन शैली विषयक सेमिनार' का आयोजन किया गया। सेमिनार को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय की मुख्य शाखा माउंट आबू से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा ने कहा कि मनुष्य की सोच सकारात्मक होनी चाहिए, सोच बदलने से हर स्तर पर सुधार आता है। नकारात्मकता लंबे समय तक काम नहीं कर सकती।

उन्होंने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति दिवंगत डॉ. अब्दुल कलाम आज अमर हैं तो अपने मूल्यों के बल पर। उन्होंने कहा कि जो समाज को देता है वह आदर्श बनता है, प्रेरणास्रोत बनता है, अमर हो जाता है। इसलिए देना सीखना चाहिए। जीवन में खुशियां बांटोगे तो खुशियां मिलेंगी। उन्होंने बताया कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अन्य कई प्रकल्प भी संचलित हैं। लगभग 20 प्रकल्पों में एक प्रभाग राजनीति का भी है। जिसका उद्देश्य राजनीतिज्ञों को राजनीति की सही परिभाषा बताना है।

इस प्रभग से विभिन्न प्रदेशों से बड़ी संख्या में राजनीतिज्ञ जुड़े हैं लेकिन उत्तर प्रदेश अछूता है। ब्र.कु. उषा ने बताया कि सेमिनार आयोजित कर राजनीतिज्ञों को मूल्यों के आधार पर राजनीति करने की प्रेरणा दी जाती है, फिर भी इसमें इस प्रभाग को अपेक्षित सफलता नहीं मिल पा रही है। इसका कारण है राजनीतिज्ञों की इस प्रभाग से दूरी। बावजूद इसके आंध्रप्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू सरीखे नेता इस प्रभाग से जुड़े हैं। जबकि गुजरात व छत्तीसगढ़ से भी इस प्रभाग के राजनीतिज्ञों का सेमिनार आयोजित किया है। इससे पूर्व मुख्य शाखा की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका का 'गीता पाठशाला' पहुँचने पर पुष्पवर्षा कर एवं विश्व विद्यालय के रीति रिवाजों के अनुसार भव्य स्वागत सत्कार किया गया। कार्यक्रम में पहुँचे संतों, रसिक पीठाधीश्वर महंत जन्मेजय शरण, नागा रामलखन दास, महंत गिरीशपति त्रिपाठी व सुदर्शन महाराज समेत अन्य वैदिक पंडितों की ओर से किये गये मंत्रोच्चार के मध्य ब्र.कु. उषा की भव्य ताजपोशी भी की गई।

कार्यक्रम के दौरान संतगणों के साथ ब्र.कु. भाई बहनें ब्र.कु. उषा की भव्य ताजपोशी करते हुए।

ब्रह्माकुमार मुकेश की ओर से समागत संतों एवं अतिथियों का स्वागत सत्कार किया गया। कार्यक्रम में कानपुर से ब्र.कु. अर्चना, राजस्थान से ब्र.कु. रचना, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. चंद्रेश, ब्र.कु. दिलीप, ब्र.कु. विनोद व ब्र.कु. आनंद सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

जो देते वही आता लौटकर

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। सेल्स एवं मार्केटिंग से जुड़े लोगों के लिए 'बिज़ी टू ईज़ी' विषय पर एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कम्पनीज़ एवं मार्केटिंग क्षेत्र के एक्ज़ीक्युटिव एवं विशेषज्ञ काफी संख्या में मौजूद रहे।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि कॉम्पिटीशन के इस दौर में व्यापार में बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिस कारण मानसिक तनाव होना स्वाभाविक है।

उन्होंने कहा कि अगर हम अपनी जीवनशैली में एक सकारात्मक परिवर्तन कर दें, तो चुनौतियों का सामना करना आसान हो जाता है। वर्तमान समय हमारे ऊपर दूसरों के नकारात्मक विचारों का बहुत जल्दी प्रभाव पड़ता है। हमें स्वयं को सकारात्मक ऊर्जा से भरना होगा। जीवन में परिस्थितियाँ तो आती ही रहेंगी, लेकिन अगर हमारी आंतरिक स्थिति मज़बूत है, तो हम उसका सामना कर सकते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा दूसरों का सहयोग करना ज़रूरी है। केवल अपने को देखें, दूसरों की बुराइयों का वर्णन न करें। याद रखें, जो भी हम दूसरों को देते हैं वही हमारे पास लौटकर आता है। उन्होंने कहा कि स्वयं के लिए वक्त निकालें। एकान्त में बैठकर स्वयं को जानने की कोशिश करें। इससे हमारी क्षमताओं का विकास होता है।

इस अवसर पर विशेष रूप से ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने अपने आशीर्वचन में कहा कि आज जब भी परमात्मा की बात आती है, तो हरेक के मन में अलग-अलग धारणाएँ उत्पन्न होने लगती हैं।

कार्यक्रम में व्यवसाय सम्बन्धित लोगों को सम्बोधित करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी।

उन्होंने कहा कि वास्तव में परमात्मा ऊर्जा का एक असीमित भण्डार है, जिसमें सर्वगुण एवं सर्व शक्तियाँ निहित हैं। अगर हम अपने जीवन में श्रेष्ठ गुणों एवं शक्तियों को विकसित कर लें तो समझो कि हम सदैव परमात्मा के समीप हैं। उन्होंने कहा कि आज के भौतिक जगत में लोग हर चीज़ को बाहरी स्वरूप में ही देखना चाहते हैं, लेकिन आध्यात्मिक शक्ति के अनुभव के लिए हमें स्वयं के अंदर जाना होगा। हमें स्वयं के वास्तविक स्वरूप को पहचानना होगा।

भिवाड़ी मेडीसिटी सेंटर के अध्यक्ष डॉ. रूप सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि वास्तव में खुशी ही जीवन की सबसे बड़ी खुराक है। लेकिन खुश रहने के लिए मन में विचारों की शुद्धता बहुत ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि जितना हमारे मन में सबके प्रति स्नेह एवं पवित्र भाव होगा, सहज ही जीवन में खुशियों का संचार होगा। कार्यक्रम में पैनल डिस्कसन के द्वारा भी वक्ताओं ने अपने अनुभवों को सबके साथ साझा किया। जिसमें मुख्य रूप से पूर्व मेजर जनरल एम.पी. सिंह, डेल टेक्नोलॉजी के वित्तीय प्रबंधक गौतम शर्मा एवं फिलिप्स कम्पनी की मैनेजर कोऑर्डिनेटर मीना कोहली शामिल थे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. हुसैन बहन ने किया।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 13th Mar 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।